केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 300 शुक्रवार 24 मई 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

एम.पी.एस. ऐप पर मिलेगी मतदान प्रतिशत की सूचना

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । लोकसभा सामान्य निर्वाचन में 25 मई को मतदान प्रतिशत की सूचना एम.पी.एस. ऐप के माध्यम से उपलब्ध करायी जायेगी। उक्त निर्देश एडीएम/उप जिला निर्वाचन अधिकारी कमलेश चन्द्र ने दिया है। वे कलेक्ट्रेट सभागार में पॉचों विधानसभाओं के सेक्टर मजिस्ट्रेट को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने बताया कि 5.30 बजे सभी पीठासीन अधिकारियों के मोबाइल पर माकपोल कराने के लिए वायस मैसेज आयेगा, माकपोल पूर्ण कराकर 6 बजे तक पीठासीन अधिकारी ऐप में माकपोल पूर्ण की बटन दबाकर सूचना देंगे। प्रातः 7 बजे मतदान प्रारम्भ की बटन दबाकर सूचना देंगे। उन्होने बताया कि ऐप में यह व्यवस्था है कि प्रत्येक कार्य के लिए समय से वायस मैसेज पीठासीन अधिकारी को प्राप्त होगा। उनके प्रशिक्षण के दौरान यह ऐप उनके मोबाइल में अपलोड करा दिया गया है, लेकिन फिर भी सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट 24 मई को पार्टी रवानगी से पूर्व तथा शाम को मतदेय स्थल पर पहुॅचकर इस ऐप का परीक्षण अवश्य कर लें।

उन्होने बताया कि वर्तमान में ऐप की नयी व्यवस्था के अनुसार मतदान की जानकारी देने के लिए पीठासीन अधिकारी ऐप के निर्धारित कालम में पुरूष, महिला तथा अन्य मतदाता की संख्या की सूचना दर्ज करेंगे। यह सूचना सेक्टर मजिस्ट्रेट तथा सहायक रिटर्निंग आफिसर (एआरओ) को भी मोबाइल पर प्रदर्शित होगा। इसके लिए पॉचों विधानसभाओं के लिए कलेक्ट्रेट सभागार में कंट्रोल रूम की स्थापना की गयी है, यहॉं पर उसको आयोग की वेबसाइट पर दर्ज किया जायेगा।

विद्यालय के किचन से सामानों की चोरी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बनकटी (बस्ती)। मुंडेरवा कस्बे के निकट सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चिकित्सालय के पीछे स्थित परिषदीय कन्या प्राथमिक विद्यालय मुंडेरवा के किचन का बीती रात को अज्ञात चोरों ने ताला तोड़कर दो बड़ा भगोना,आठ लीटर का कुकर तथा भरा सिलेंडर पर हाथ साफ कर दिया। जिसकी अनुमानित कीमत लगभग ग्यारह हजार रही होगी। रसोईया द्वारा दी गई सूचना पर प्रधानाध्यापक मौके पर पहुंचकर डायल 112 नंबर को सूचित किया तथा थाना प्रभारी मुंडेरवा को भी दूरभाष के माध्यम से अवगत कराया।

बताते चलें कि थाना प्रभारी मुंडेरवा को दिए तहरीर में प्रधानाध्यापक उमाकांत शुक्ला ने बताया है कि दिनांक 22व 23 मई की रात को अज्ञात चोरों ने कन्या प्राथमिक विद्यालय मुंडेरवा के किचन का सरिया के बल पर कुंडी तोड़कर किचन के अंदर रखा दो बड़ा भगोना, एक 8 लीटर का कुकर ,तथा भरा हुआ सिलेंडर उठा ले गए। रसोईया के माध्यम से प्रधानाध्यापक को घटना की जानकारी मिली। प्रधानाध्यापक ने घटना की लिखित तहरीर स्थानीय थाने लगायत 112 नंबर डायल पुलिस को भी दिया। प्रधानाध्यापक के बार–बार अनुरोध के बावजूद भी स्थानीय पुलिस द्वारा मुकदमा पंजीकृत नहीं किया गया है। उपरोक्त घटना महज थाने से एक किलोमीटर की दूरी पर हुई है। परिषदीय विद्यालयों में हो रही चोरी की घटनाओं को पुलिस गंभीरता से नहीं लेती है ।आए दिन विद्यालयों में चोरी की घटनाएं होती रहती हैं और पुलिस मुकदमा दर्ज नहीं करती है जिसके परिणाम स्वरूप चोरों का मनोबल बढ़ता जा रहा है। एक वर्ष के भीतर परिषदीय विद्यालय पूर्व माध्यमिक विद्यालय टिकरिया, दीक्षापार, अहरा,बैदाकला सहित आधा दर्जन विद्यालयों में भी चोरी कीघटनाएं हुई। किंतु एक भी मामले में पुलिस मुकदमा पंजीकृत नहीं किया। जिसके परिणाम स्वरूप चोरों का मनोबल बढ़ता चला जा रहा है जबकि परिषदीय प्राथमिक व पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक परेशान हैं। शिक्षक संघ का प्रतिनिधि मंडल पुलिस अधीक्षक बस्ती से भी मिल चुका है फिर भी इस मामले में प्रभावी कार्रवाई न होने से मुंडेरवा परिक्षेत्र में चोरों का मनोबल बढ़ता चला जा रहा है।

पूर्व पीएम देवगौड़ा ने पोते प्रज्जवल को दिया चेतावनी

बेंगलूर (आभा)। पूर्व प्रधानमंत्री और जनता दल (सेक्युलर) के प्रमुख एचडी देवेगौड़ा ने अपने पोते और यौन उत्पीड़न मामले के आरोपी प्रज्वल रेवन्ना को देश लौटने और पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करने की कड़ी चेतावनी दी है। उन्होंने कहा कि अगर रेवन्ना पर लगे आरोप सही निकले तो उसे कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चाहिए। 'प्रज्वल रेवन्ना को मेरी चेतावनी' शीर्षक वाले दो पन्नों के खुले पत्र में, 91 वर्षीय नेता ने जोर देकर कहा कि उन्हें अपने पोते की कथित गतिविधियों के बारे में जानकारी नहीं थी। पूर्व प्रधानमंत्री ने लेटर लिखते हुए कहा कि प्रज्वल रेवन्ना को मैंने चेतावनी जारी कर दी है कि वह जहां भी है वहां से तुरंत लौटे और खुद को कानूनी प्रक्रिया के अधीन करें। उसे मेरे धैर्य की और परीक्षा नहीं लेनी चाहिए।

एक लंबे इमोशनल लेटर में एचडी देवगौड़ा ने कहा, 'पिछले कुछ हफ्तों में लोगों ने मेरे और मेरे परिवार के खिलाफ सबसे कठोर शब्दों का इस्तेमाल किया है। मुझे इसकी जानकारी है। मैं उन्हें रोकना नहीं चाहता। मैं उनकी आलोचना नहीं करना चाहता। मैं उनसे बहस करने की कोशिश नहीं करूंगा कि उन्हें सारे तथ्य सामने आने तक इंतजार करना चाहिए था। मैं लोगों को यह भी विश्वास नहीं दिला सकता कि मैं प्रज्वल की गतिविधियों से अनजान था। मैं उन्हें यह विश्वास नहीं दिला सकता कि मुझे उसकी रक्षा करने की कोई इच्छा नहीं है। मैं उन्हें यह विश्वास नहीं दिला सकता कि मुझे उसकी गतिविधियों के बारे में जानकारी नहीं है और मुझे उसकी विदेश यात्रा के बारे में जानकारी नहीं थी।

ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी हैं प्राथमिक उपचार केन्द्र –डा. वी.के. वर्मा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । होम्योपैथ के वरिष्ठ चिकित्सक जिला चिकित्सालय बस्ती में आयुष चिकित्साधिकारी डा. वी.के. वर्मा ने गनेशपुर के निकट स्थित सुदामागंज में अमित मेडिकल सेन्टर का उद्घाटन किया। कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में यह प्राथमिक उपचार केन्द्र निश्चित रूप से क्षेत्रीय नागरिकों के लिये उपयोगी साबित होगा। दुर्घटना एवं आकस्मिक स्थिति में प्राथमिक उपचार से अनमोल जिन्दगी बचायी जा सकती है।

अमित मेडिकल सेन्टर के डा. अमित कुमार वर्मा ने उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुये बताया कि यहां प्राथमिक उपचार के साथ ही लोगों को उचित दर पर दवायें उपलब्ध करायी जायेगी।

इस अवसर पर डा. ध्रुवचन्द्र वर्मा, डा. राजकुमार, डा. बाबूराम, डा. लालजी यादव, शिव प्रसाद के साथ ही अनेक स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

बहुजन मुक्ति पार्टी ने प्रेक्षक से किया बसपा प्रत्याशी की शिकायत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । बहुजन मुक्ति पार्टी के प्रत्याशी आर.के. गौतम ने गुरूवार को चुनाव प्रेक्षक श्रीमती बबिता को ज्ञापन देकर बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी लवकुश पटेल द्वारा प्रचारित किये जा रहे बैलेट पेपर से क्रमांक संख्या 9 के चुनाव चिन्ह चारपाई को गायब कर उसके साथ ही किसान का चुनाव निशान लगा देने का आरोप लगाया। उन्होने प्रेक्षक को साक्ष्यों के साथ बताया कि इससे उनके मतदाताओं में भ्रम पैदा हो रहा है, इसमें तत्काल सुधार के साथ ही बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी लवकुश पटेल के विरूद्ध समुचित धाराओं में कार्यवाही सुनिश्चित किया जाय।

-बैलेट पेपर में चुनाव निशान के साथ छेड़छाड़ का आरोप

बहुजन मुक्ति पार्टी के प्रत्याशी आर.के. गौतम ने प्रेक्षक को बताया कि उनका चुनाव निशान चारपाई है और इसी आधार पर उन्होने मतदाताओं के बीच प्रचार किया है। प्रेक्षक ने ज्ञापन लेने के बाद तत्काल कार्रवाई का आश्वासन दिया। प्रेक्षक को ज्ञापन देते समय बहुजन मुक्ति पार्टी के चन्द्रिका प्रसाद, हृदय गौतम, राम सुमेर यादव, आर.के. आरतियन शामिल रहे।

निर्णायक क्षणों में भाजपा ने निकाली पद यात्रा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लोकसभा चुनाव का प्रचार गुरुवार को शाम 5 बजे थम गया लेकिन अंतिम समय तक भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी हरीश द्विवेदी के समर्थन में बड़े नेताओं के आने का सिलसिला जारी रहा।

इसी क्रम में गुरुवार को प्रचार रुकने के 2 घंटा पहले बेंगलुरु दक्षिण के सांसद और भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या ने बस्ती पदयात्रा कार्यक्रम में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। भाजपा प्रत्याशी हरीश द्विवेदी के समर्थन में पदयात्रा में सम्मलित हुए रोडवेज स्थित गायत्री मन्दिर से शुरु हुआ पदयात्रा दक्षिण दरवाजा मंगल बाजार होते हुए पाण्डेय बाजार मारवाड़ी मन्दिर पर समाप्त हुआ।

भाजयुमा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या ने कहा कि यह चुनाव राष्ट्र रक्षा और विकसित भारत के संकल्पों को पूरा करने का है। नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाकर ही विकसित भारत की आकांक्षाओं को पूरा किया जा सकता है।

युवाओ को संबोधित करते हुए

सांसद हरीश द्विवेदी ने कहा कि बस्ती लोकसभा के सभी बूथों पर युवाओं के बल पर विजय हासिल करेंगे। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के बाद इंडी गठबंधन के प्रत्याशी एवीएम पर सारा गुस्सा उतारेंगे।

भाजपा के जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र ने आभार व्यक्त करते हुए कहा हमारे सभी कार्यकर्ता पुरी तरह एलर्ट मोड़ में रहे। हमारे परीक्षा की अंतिम घडी आ चुकी है।

इस मौके पर विधानसभा संयोजक अनूप खरे, संजय चौधरी, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष अमित गुप्ता, राकेश श्रीवास्तव, अंकुर वर्मा, अमृत कुमार वर्मा, नगर अध्यक्ष अलोक पाण्डेय, दिलीप पाण्डेय, दिवाकर मिश्र, गौरव अग्रवाल, अभिषेक सिंह, आशीष शुक्ल, आशा सिंह, रोली सिंह, तृप्ति गुप्ता, मीना पाण्डेय, शालिनी मिश्र, सुमन सिंह, अनिल पाण्डेय, रमेश गुप्ता, नन्द किशोर गुप्ता, राजन ठाकुर, राना तिवारी, ओम प्रकाश ठाकुर, भानु प्रकाश मिश्र, परमेश्वर शुक्ल पप्पू, प्रफुल्ल श्रीवास्तव सहित पार्टी के पदाधिकारी कार्यकर्ता सम्मलित हुए।

डुमरियागंज–अपनों ने बिगाड़ा, जप नाम= जप नाम का सहारा

–सुभाष चन्द्र पाण्डेय–

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बांसी (सिद्धार्थनगर)। वर्ष 2019 के लोक सभा चुनाव में डुमरियागंज संसदीय क्षेत्र में दूसरे पायदान पर रही बसपा न पहले पायदान पर पंहुचने के लिए इस बार घोषित प्रत्याशी को बदलकर नए महावत का ऐलान किया। नामांकन बिल्कुल गुपचुप तरीके से हुआ , लेकिन कार्यकर्ताओं को पत चल गया वे गुपचुप के नए तरीके से खफा होकर जिला मुख्यालय पहुंच गए और नामांकन करवा कर वापस जा रहे जिला अध्यक्ष और उपाध्यक्ष पर आक्रोशित हो गये । बात थोड़ी बिगड़ गयी जिसका असर कम होने के बजाय बढ़ता गया। तमाम नाराज कार्यकर्ता भीम आर्मी प्रमुख चन्द्रशेखर आजाद रावण की पार्टी आसपा (काशीराम) के साथ होते गए। परिणाम स्वरूप आसपा प्रत्याशी पूर्व विधायक चौधरी अमर सिंह का काफिला बढ़ता ही गया और अब वे मुख्य लड़ाई में नजर आने लगे हैं। कार्यकर्ताओ की नराजगी के बाद अब बसपा प्रत्याशी पदाधिकारियों के पास बहन जी के नाम की दुहाई देना ही प्रमुख अस्त्र बचा प्रतीत होता है। वर्ष 2014 व 2019 का चुनाव आसानी से जीतने में कामयाब

रही भाजप को अपने दो बार के प्रत्याशी रहे तत्कालीन कांग्रेस सांसद जगदम्बिका पाल को पुनः जीत दिलाने के लिए राम मन्दिर, पीएम नरेन्द्र मोदी व सी०एम० योगी के नाम की बार = बार दुहाई देनी पड़ रही है। प्रत्याशी को जिताने के लिए सी०एम० योगी ने डुमरियागंज की सभा में सपा प्रत्याशी के खिलाफ जमकर गुस्सा दिखाया जो इस हद तक रहा कि माफिया और जुतिया कर जैसे शब्दों तक का प्रयोग कर डाला। यह भाषण भी खूब वायरल हो रहा है, इसी कड़ी में अपने नुक्कड सभा के दौरान पार्टी प्रत्याशी मौजूदा सांसद जगदम्बिका पाल ने भी सपा प्रत्याशी पर जमकर गर्जना किया

इस दौरान उन्होंने रावण, दशहरा और वध जैसे शब्दो का प्रयोग किया । उनके इस भाषण का विडियो भी जमकर वायरल हो रहा है। लगातार पन्द्रह वर्षो से सांसद श्री पाल के समर्थको को मन्दिर, सी०एम० योगी और पी०एम० मोदी के नाम की जगह–जगह दुहाई देनी पड रही हैं। बसपा प्रत्याशी नदीम मिर्जा की प्रचार प्रक्रिया शन्ति के साथ बहन जी के नाम के सहारे आगे बढ़ रही है। वही चन्द्रशेखर आजाद रावण की पार्टी से प्रत्याशी चौधरी अमर सिंह के प्रचार कि गति समर्थको के जोश व समपर्ण के साथ तेज होती जा रही है। जीत के जोर अजमाईश में लगी सपा अपने इण्डिया गठबन्धन वाले एजेंडे को लेकर पी०डी०ए० के साथ ब्राह्मण की संख्यात्मक गणित को सिद्ध करने में लगी है। उसको समर्थको के लिए शीर्ष नेताओं के साथ ही पार्टी के प्रत्याशी भीष्मशंकर तिवारी, के लिए गठबन्धन के लिए नेताओं के साथ हि प्रत्याशी के नाम का सहारा बहुत ले रही है। सन्तकबीरनगर में दो बार के विजेता रहे सपा प्रत्याशी भीष्म शंकर उर्फ कुशल तिवारी का नाम सोशल मिडिया व आमने सामने के हाल चाल पूछवल में लोगों की जुबान पर है, की सब कुशल मंगल है। दूसरे प्रत्याशी के समर्थक कुशल मंगल शब्द से परहेज करते या बचते नजर आ रहे हैं। भाजपा, इण्डिया गठबन्धन से सपा, बसपा व भीम आर्मी के अलावा पीस पाटी के प्रत्याशी नौशाद आलम व स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में किरन देवी का नाम शामिल हैं।

चुनाव में जीत का प्रयास तो सभी कर रहे हैं। लेकिन अब भाजपा और इंडिया गठबन्धन सपा प्रत्याशी के समर्थक एक दूसरे के बीच में सीधी लड़ाई देख रहे है। इससे इतर आसपा प्रत्याशी चौधरी अमर सिंह की स्थिति उनके समर्थक त्रिकोणात्मक लड़ाई में काफी मजबूत बता रहे हैं। लेकिन स्थिति स्पष्ट 4 जून को ही होगी हां इस बार इस ऐंगल पर ध्यान दे तो भाजपा व बसपा की स्थिति में काफी समानता है। दोनो दलो के समर्थक पदाधिकारी जमकर जपनाम जपनाम का सहारा ले रहे हैं!

छठे चरण का प्रचार थमा, मतदान 25 को

नई दिल्ली (आभा)। लोकसभा चुनाव के छठे चरण का प्रचार गुरुवार शाम खत्म हो गया। छठे दौर में 25 मई को आठ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 58 सीटों पर वोटिंग होनी है। इसमें जम्मू–कश्मीर का अनंतनाग–राजौरी संसदीय क्षेत्र भी है, जहां मतदान तीसरे चरण की बजाय छठे चरण के लिए स्थगित कर दिया गया था। पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी, भोजपुरी कलाकार मनोज तिवारी, निरहुआ, पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती और मनोहर लाल समेत कई केंद्रीय मंत्रियों की किस्मत का फैसला इसी चरण में ईवीएम में बंद हो जाएगा।

चुनाव के छठे चरण में उत्तर प्रदेश की 14 लोकसभा सीटों और बलरामपुर जिले की गैंसण्डी विधानसभा के उपचुनाव का प्रचार

गुरुवार की शाम को थम जाएगा। शनिवार 25 मई को होने वाले मतदान की तैयारी शुरु हो जाएगी। यह लोकसभा सीटें हैं–सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, फूलपुर, इलाहाबाद, अम्बेडकरनगर, श्रावस्ती, डुमरियागंज, बस्ती, संतकबीर नगर, लालगंज (सु.), आजमगढ़, जौनपुर, मछलीशहर (सु.) और मदोही। इनमें से 12 सीटें सामान्य श्रेणी की और दो सुरक्षित हैं।

छठे चरण में जिन सीटों पर मतदान होना है उनमें उत्तर प्रदेश की 14, हरियाणा की सभी 10, बिहार और पश्चिम बंगाल की आठ–आठ, दिल्ली की सभी सात, ओडिशा की छह और झारखंड की चार सीटें शामिल है। वहीं सबसे कम जम्मू–कश्मीर की एक सीट पर भी लोग वोट डालेंगे।

2019 में इन 58 में से 40 सीटें भाजपा ने जीती थीं। वहीं दूसरे स्थान पर बसपा के खाते में चार सीटें गई थीं जबकि कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला था। पिछले चुनाव में इन 58 सीटों पर कुल 64.22ः फीसदी वोट पड़े थे। सबसे ज्यादा 84.59 फीसदी मतदान पश्चिम बंगाल में हुआ था। वहीं, सबसे कम 8.98 फीसदी मतदान जम्मू–कश्मीर में दर्ज किया गया था।

एलेक्सा डिवाइस से बहन की जान बचाने वाली निकिता को अमेजॉन ने दिया उपहार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। गुरुवार को शिक्षित युवा सेवा समिति कार्यालय पर कुछ समय पूर्व जनपद के आवास विकास कॉलोनी में हुई घटना जिसमें निकिता नाम की बच्ची ने एलेक्सा डिवाइस के माध्यम से कुत्ते की आवाज निकालकर बंदरों से अपनी और अपनी छोटी बहन की रक्षा की थी जिसे मीडिया में काफी सराहा भी गया था। निकिता के चातुर्य एवं बहादुरी को देखते हुए अमेजॉन एलेक्सा के बंगलौर स्थित कार्यालय द्वारा निकिता एवं चांदनी त्रिपाठी (शिक्षित युवा सेवा समिति) की अलेक्सा मास्टर ट्रेनर के रूप में पूर्व में कार्यरत थी एवं निकिता के परिवार तक अलेक्सा पहुंचाने में उनकी भूमिका भी

थी) इन दोनों को उपहार सामग्री एलेक्सा डिवाइस, खाद्य सामग्री देकर पुरस्कृत करने हेतु शिक्षित युवा सेवा समिति (एस.वाई.एस.एस.) के निदेशक गोपाल कृष्ण अग्रवाल को अधिकृत किया गया था जिसे रोटरी ईनर ह्वील क्लब की श्रीमती संगीता अग्रवाल द्वारा उन्हें प्रदान किया गया है। अमेजॉन एलेक्सा टीम ने इन दोनों के सफलतम् भविष्य की कामना करते हुए उनके कार्यों की सराहना की है।

ज्ञातव्य हो कि पूर्व में एन.ए.बी. इंडिया के द्वारा संचालित कार्यक्रम के अंतर्गत बस्ती सहित गोंडा संत कबीर नगर अयोध्या एवं गोरखपुर के 200 से अधिक विद्यालयों में निशुल्क एलेक्सा डिवाइस प्रदान कराया जा चुका है। उपहार वितरण के समय संस्था के तमाम विशेष शिक्षकों के साथ –साथ निकिता के परिवारजन भी उपस्थित थे।

शत प्रतिशत मतदान के लिये रेड क्रास ने चलाया जागरूकता अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। आगामी 25 मई को लोकसभा के चुनाव में शत प्रतिशत मतदान के लिये इण्डियन रेड क्रास सोसायटी द्वारा सघन सम्पर्क अभियान चलाया जा रहा है। रेड क्रास के जिला सचिव कुलवेन्द्र सिंह ने बताया कि रेड क्रास के अध्यक्ष और जिलाधिकारी अन्द्रावामसी के निर्देश पर फजल–उर रहमान मेमोरियल सोसायटी, जन उत्थान चैरिटेबल ट्रस्ट सोसायटी द्वारा मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है कि वे अपने वोट का प्रयोग अवश्य करें। कुलवेन्द्र सिंह ने बताया कि शत प्रतिशत मतदान के लिये स्थान–स्थान पर होर्डिंग भी लगाये गये हैं।

प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से कुलवेन्द्र सिंह ने बताया कि गुरूवार को कचहरी, रोडवेज ,

कम्पनीबाग, गांधीनगर आदि क्षेत्रों में सम्पर्क अभियान चलाया गया जिसमें रेडक्रास के सदस्यों के साथ ही स्थानीय नागरिकों ने भी हिस्सा लिया। लोगों से आग्रह किया गया कि लोकतंत्र की मजबूती के लिये पहले मतदान, उसके बाद जलपान करें।

मतदाता जागरूकता अभियान के दौरान राजेन्द्र सिंह रजावत, काजी फरजान, अंशुल पटेल, रहमान अली रहमान, शिवम सिंह के साथ ही रेडक्रास और सम्बंधित संस्थाओं के अनेक पदाधिकारी शामिल रहे।

भाजपा की जीत के लिये प्रदेश प्रवक्ता मनीष शुक्ल ने घर–घर बनाया संवाद

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । चुनाव प्रचार के अंतिम दिन बस्ती लोकसभा से हरीश द्विवेदी को तीसरी बार सांसद बनाने के लिये पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं ने पूरी ताकत झोंक दिया। गुरुवार को पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता मनीष शुक्ल ने हर्रैया विधानसभा क्षेत्र के खेमराजपुर, नेतवरपट्टी, लखना, पूरे चेतन के साथ ही लोकसभा क्षेत्र के अनेक स्थानों पर घर–घर जाकर लोगों से संवाद बनाया और भाजपा प्रत्याशी के जीत का आवाहन किया। इसी कड़ी में उन्होने विक्रमजोत में निकली मोटर साईकिल रैली में हिस्सा लिया।

प्रदेश प्रवक्ता मनीष शुक्ल ने लोगों को पार्टी की नीति, कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी देते हुये कहा कि भाजपा ने विरासत और विकास के बीच समन्वय बनाकर विकास को गति दिया है। केन्द्र की सरकार ने जहां पं. दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय संकल्प को जमीनी धरातल पर पहुंचाया वहीं ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में देश विकास के पथ पर है। कहा कि बस्ती ही वह धरती है

जहां मखौड़ा धाम को मर्यादा के राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के जन्म के कारक होने का श्रेय प्राप्त है। आज अयोध्या धाम में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण भाजपा के संकल्प और बलिदान की देन है।

प्रदेश प्रवक्ता मनीष शुक्ल ने कहा कि यह चुनाव दो विचारधाराओं का है, एक वे लोग हैं जिन्हें आपने सपा से विधायक बनाया और सदन में उन्होने श्रीराम विरोध किया और वे एक वे लोग हैं जिन्होने श्रीराम मंदिर निर्माण के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अगाध जन विश्वास और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उत्तर प्रदेश को विकसित प्रदेश बनाने के संकल्प को लेकर मतदाताओं का भरोसा भाजपा के पक्ष में सृजन कर रहा है। बैठकों में लोगों ने उन्हें भरोसा दिलाया कि भाजपा एक बार फिर जीत का रेकार्ड बनायेगी। कहा कि सपा, बसपा अपने वजूद के लिये लड़ रहे हैं और कांग्रेस का उत्तर प्रदेश में कोई जनाधार नहीं है। उन्होने दावा किया कि भाजपा पहले से बेहतर चुनाव परिणाम लेकर आयेगी क्योंकि मतदाता पूरी तरह से भाजपा के पक्ष में है।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 24 मई 2024 शुक्रवार

सम्पादकीय

बिगडैल बाप के बेटे और कानून

पुणे में अमीर बाप के बिगड़ैल अल्पवयस्क बेटे ने शराब के नशे में दो युवा इंजीनियरों को रौंदने के बाद जिस तरह आनन–फानन में जमानत हासिल की, उस घटना ने तमाम सवालों को भी जन्म दिया। दुस्साहस देखिये कि दो करोड़ रुपये से अधिक महंगी विदेशी कार को सड़क पर यह किशोर दो सौ किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ा रहा था। उस धनी बाप के नशेड़ी बेटे को पुणे की सड़कों में रोकने वाला कोई नहीं था। उसने कई जगह दोस्तों के साथ शराब पार्टियां निबटाने के बाद अपनी पोर्श कार को इतनी अनियंत्रित गति से दौड़ाया कि मोटरसाइकिल सवार दो इंजीनियरों को मौत की नींद सुला दिया। संयोग से दोनों इंजीनियर जबलपुर, मध्यप्रदेश के ही थे। इस मामले में सोशल मीडिया पर आक्रोश का लावा तब फूटा जब 17 साल कुछ महीनों की उम्र वाले अभियुक्त को किशोर होने के नाते कुछ ही घंटों में जमानत दे दी गई। दो परिवारों के उम्मीदों के चिराग बुझ गए और किशोर न्यायालय ने अभियुक्त को कुछ निर्देश देकर ही छोड़ दिया। सोशल मीडिया पर यह विषय रोष का विषय बना रहा है कि किशोर न्याय बोर्ड ने जमानत देते वक्त उसे महज दुर्घटना पर निबंध लिखने, 15 दिन तक ट्रैफिक पुलिस के साथ काम करने तथा मनोचिकित्सक से शराब की लत का इलाज कराने को कहा। इन शर्तों को सुनकर सोशल मीडिया पर गंभीर अपराधों में लिप्त किशोरों को वयस्कों की तरह दंड देने की मांग तेज हुई। फिर जब इस मामले में राजनीतिक प्रतिक्रिया तेज हुई तो अभियुक्त किशोर के अरबपति बिल्डर पिता और नाबालिगों को शराब परोसने वाले होटल के अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया। सामाजिक जागरूकता की पहल रंग लायी और चुनावी माहौल में तुरत–फुरत कार्रवाई हुई। मुख्यमंत्री व उप मुख्यमंत्री की सख्त कार्रवाई के निर्देश से लोगों में सकारात्मक संदेश गया। साथ ही पीड़ित पक्ष में भी विश्वास जगा कि कानून काम करता है चाहे आरोपी कितना भी ताकतवर क्यों न हो। निस्संदेह, ऐसे मामलों में अभियुक्तों के साथ शून्य सहिष्णुता का संदेश जाना ही चाहिए।

बहरहाल, इस घातक दुर्घटना के बाद सार्वजनिक विमर्श में यह सवाल फिर उठा कि गंभीर अपराधों में किशोरों की संलिप्तता होने पर वयस्कों के कानून के हिसाब से उन्हें सजा क्यों नहीं मिलती। सवाल यह है कि धनाढ्य बिल्डर ने क्यों किशोर पुत्र को बिना लाइसेंस के कार चलाने की अनुमति दी? क्यों बेटे को शराब पार्टी करने की इजाजत दी? क्यों होटल वालों ने किशोरों को शराब पीने की सुविधा दी? जब किशोर ने बार–बार जानबूझकर तमाम कानूनों का उल्लंघन किया तो उसे सामान्य कानून के तहत दंडित क्यों नहीं किया जाना चाहिए? बहरहाल नये सिरे से किशोर न्याय अधिनियम में सुधार की बहस तेज हुई। एक गंभीर आपराधिक घटना के बाद किशोर न्याय बोर्ड द्वारा किशोर को मामूली परामर्श के बाद छोड़ना भी विवाद का विषय बना। सामाजिक व राजनीतिक दबाव के बाद पुणे पुलिस द्वारा की गई तुरंत कार्रवाई समय की जरूरत थी। जो कालांतर भविष्य में ऐसी त्रासदियों को टालने में मददगार हो सकती है। कहा जाने लगा कि अपराध के अनुपात में दंड का निर्धारण किया जाना चाहिए। दरअसल, देश के विभिन्न भागों में भी किशोरों द्वारा तेज रफ्तार वाहन चलाने के तमाम मामले प्रकाश में आते रहते हैं, जिसमें खतरनाक ड्राइविंग के चलते कई किशोरों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। ये घटनाएं यातायात कानूनों को सख्ती से लागू करने और किशोर अपराधियों को दंडित करने के लिये कानूनी ढांचे की समीक्षा की आवश्यकता पर बल देती हैं। निस्संदेह, देश की न्यायिक प्रणाली को इस तरह के मामलों में उचित प्रतिक्रिया देनी चाहिए। सही मायनों में अपराधी की उम्र की परवाह किये बिना ऐसे घातक कृत्यों में कड़े दंड के जरिये मिसाल कायम की जानी चाहिए। इससे जहां जनता का विश्वास बहाल होगा, वहीं हमारी सड़कों पर किशोरों की लापरवाह ड्राइविंग से होने वाली मौतों को भी रोका जा सकेगा। निश्चित रूप से इससे दुर्घटनाओं में मारे लोगों के परिजनों को भी न्याय मिल सकेगा।

किस करवट बैठेगा पूर्वांचल का सियासी मिजाज

–अजय कुमार–

उत्तर प्रदेश में पांच चरण के मतदान के बाद अब राजनैतिक ताकतों का पूरा फोकस पूर्वांचल की 27 लोकसभा सीटों पर आकर टिक गया हैं। पूर्वांचल में पूरे प्रदेश से अलग सियासी बयार बहती है। यह क्षेत्र राजनैतिक रूप से काफी सशक्त भीर है। यहां के लोगों की रग–रग में सियासत देखने को मिल जाती है। तमाम बड़े और दिग्गज नेताओं को भी पूर्वांचल की धरती काफी रास आती है। यहां से निकले नेताओं ने देश–विदेश में खूब नाम कमाया है। पूर्व प्रधानमंत्रियों में पंडित जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, वीपी सिंह, चन्द्रशेखर यही की धरती से निकलकर सियासत की बुलंदी पर पहुंचे थे। पूर्वांचल से सर्वाधिक बार निर्वाचित होने वाले सांसदों की सूची पर नजर डालें तो बलिया की धरती के रहने वाले देश के पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर 1977 से 1991 तक के बीच में बलिया से रिकॉर्ड 8 बार सांसद निर्वाचित हुए हैं। इसके अलावा बलिया के चंद्रशेखर ने सीधे सांसद से प्रधानमंत्री बनने तक का सफर तय किया है। इन 27 सीटों में एक सीट वाराणसी की भी है, जहां से मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चुनाव लड़ रहे हैं। यह उनका तीसरा लोकसभा चुनाव है। मोदी की जीत में कहीं कोई संदेह नहीं है, यहां तक की सपा प्रमुख अखिलेश यादव तक ने यहां से मोदी की जीत की भविष्यवाणी कर दी है। हॉ, यह और बात है कि वह यहां से तीसरी बार चुनाव जीत कर प्रधानमंत्री के रूप में भी हैट्रिक लगा पायेंगे। इस बार यदि मोदी फिर से पीएम बनते हैं तो वह देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के लगातार तीन कार्यकाल में प्रधानमंत्री बनने के रिकार्ड की बराबरी कर लेंगे। इसको लेकर बीजेपी तो पूरी तरह से आत्मविश्वास से भरी हुई है, लेकिन विपक्ष को यही लगता है कि अबकी से मोदी बुरी तरह से हार रहे हैं।

खैर, मुद्दे पर आया जाये तो पूर्वांचल ने देश को देश की पहली मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी जैसी नेत्री दी तो संपूर्णानंद, कमलापति त्रिपाठी, वीर बहादुर सिंह और राम नरेश यादव जैसे मुख्यमंत्री यूपी को दिए। इतना ही नहीं सीपीएन सिंह, महावीर प्रसाद, कल्पनाथ राय, सुखदेव प्रसाद, केडी मालवीय, आरपीएन सिंह और कलराज मिश्र जैसे नेता पूर्वांचल से निकल कर केंद्रीय सरकारों में महत्वपूर्ण पदों पर हैं और रहे। सोशलिस्ट पार्टी के नेता बाबू गेंदा लाल से लेकर कम्युनिस्ट नेता सिवन लाल सक्सेना जैसे नेताओं ने पूर्वांचल से राजनीति की। हरिशंकर तिवारी, मार्कंडेय चंद्र, बलराम यादव, जगदम्बिका पाल, राम गोविंद चौधरी, अम्बिका चौधरी जैसे पूर्वांचल के कद्दावर नेता राज्य सरकारों में मंत्री रहे। वर्तमान में सीएम योगी आदित्यनाथ के साथ ही सात कैबिनेट सहित कई मंत्री पूर्वांचल से हैं। इसके लिए इंडिया और एनडीए ने ताकत झोंक दी है। खास बात यह है कि इसी क्षेत्र में एनडीए गठबंधन में शामिल सुभासपा, निषाद पार्टी और अपना दल की प्रतिष्ठा दांव पर है तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र में भी चुनाव है। दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन में शामिल तृणमूल कांग्रेस को एक और कांग्रेस को पांच सीटें मिली हैं। इन सीटों को पर कांग्रेस और सपा ने फ्रंटल संगठनों के पदाधिकारियों को उतार दिया है। पूर्वांचल की 27 लोकसभा सीटों पर एक–एक वोट का हिसाब रखा जा रहा है।

यूपी के पश्चिमी, मध्य और बुंदेलखंड के इलाकों में चुनाव होने के बाद सभी दलों के आलाकमान ने यहां के ज्यादातर नेताओं को इन्हीं 27 सीटों पर उतार दिया गया है। भाजपा ने वाराणसी में महिला सम्मेलन के जरिए नया प्रयोग किया है तो आसपास की सीटों पर प्रचार का नया मॉडल अपनाया है। पार्टी की ओर से पूर्वांचल की सीटों पर जल जीवन मिशन, मकान और शौचालय हित अन्य योजनाओं का लाभ पाने वाले लाभार्थियों की ब्लॉकवार सूची निकाली गई है। इस सूची के जरिए मतदाताओं तक पहुंच कर उन्हें समझाने का प्रयास किया जा रहा है। हर विधानसभा को तीन से चार हिस्से में बांट कर वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में बैठकें की जा रही है। इतना ही नहीं पार्टी ने नई रणनीति के तहत समूह बैठक तय की है। इसमें डॉक्टर, इंजीनियर, कपड़ा कारोबारी, दवा व्यापारी की बैठकें तय की गई हैं। उदाहरण के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत नेताओं को इसी क्षेत्र के लोगों से मिलने का लक्ष्य दिया है। इसके लिए बाकायदे विधानसभा क्षेत्रवार सूची सौंपी गई है। खास बात यह है कि पिछड़े वर्ग पर ज्यादा फोकस किया गया है। यही वजह है कि पिछड़े वर्ग की जहां जिस जाति की आबादी है, उस क्षेत्र में उसी बिरादरी के नेताओं को भेजा गया है। भाजपा पिछड़ा वर्ग काशी क्षेत्र के महामंत्री सुभाष कुशवाहा ने बताया कि वाराणसी और आसपास की सीटों पर इटावा, एटा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी सहित सैफई के आसपास के यादव नेताओं को उतार दिया गया है। इसी तरह निषाद बहुल इलाके में इसी बिरादरी के नेताओं को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

उधर, पूर्वांचल की 27 सीटों पर इंडिया गठबंधन तू चल मैं आता हूं की तर्ज पर कार्य कर रही है। सपा और कांग्रेस इस इलाके को सियासी तौर पर उपजाऊ मानती है। यही वजह है कि भाजपा के वरिष्ठ नेताओं की जिन सीटों पर जनसभा हो रही है, उन पर निगाह रखी जा रही है। इसके लिए कांग्रेस ने अलग से टीम लगाई है। यह टीम नेताओं के कार्यक्रम और उनके द्वारा जनसभा में उठाए गए सवाल का जवाब तैयार कर अपने नेताओं को भेज रही है। इतना ही नहीं अगले दो से तीन दिन में संबंधित इलाके में न सिर्फ पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की सभा लगाई जा रही है बल्कि उन सीटों पर मतदाताओं को लुभाने के लिए नई रणनीति अपनाई जा रही है। कांग्रेस और सपा ने पूर्वांचल की 27 सीटों के लिए रायबरेली–अमेठी मॉडल को भी लागू किया है। विधानसभा क्षेत्र को सेक्टर में बांट कर बूथों पर जिस बिरादरी का वोटबैंक है, उसी बिरादरी के नेता को लगाया गया है। इन दोनों पार्टियों ने यादव, मुसलमान के अलावा अन्य जातियों के नेताओं को जिम्मेदारी देने पर जोर दिया है। ब्राह्मण बहुल इलाके की जिम्मेदारी खुद कांग्रेस प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडेय ने संभाली है। वह दिन में सपा–कांग्रेस के नेताओं के बीच समन्वय बैठकें कर रहे हैं तो रात में ब्राह्मण बहुल इलाके में रात्रि चौपाल लगा रहे हैं। इसी तरह सपा पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डा. राजपाल कश्यप निषाद, कश्यप, बिंद बिरादरी के बीच रात्रिकाली बैठकें करने में जुटे हैं। डा. कश्यप का दावा है कि सपा की ओर से निषाद बिरादरी के पांच प्रत्याशी उतारने का फायदा मिल रहा है।

छठवें चरण की 14 सीटें और सातवें चरण की 13 सीटें पर कई दिग्गज मैदान में हैं। इसमें सुल्तानपुर से मेनका गांधी, आजमगढ़ से धर्मेंद्र यादव, भदोही से तृणमूल कांग्रेस के ललितेशपति त्रिपाठी, इलाहाबाद से उज्जवल रमण सिंह, जौनपुर से महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री कृपाशंकर सिंह जैसे नामचीन चेहरे हैं। वाराणसी से खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय, मिर्जापुर से अपना दल की अनुप्रिया पटेल, घोसी से सुभासपा के अरविंद राजभर मैदान में हैं। इसी क्षेत्र में निषाद पार्टी का भी वजूद है। ऐसे में इन सभी दलों के मुखिया से लेकर बूथ सदस्य तक गांव– गांव वोट मांग रहे हैं।

संविधान की मूल भावना और आरक्षण की कसौटी

–के.पी. सिंह–

वर्तमान लोकसभा चुनावों के प्रचार में आरक्षण को लेकर, विशेषकर एक समुदाय के आरक्षण पर आरोप–प्रत्यारोप का दौर जारी है। विपक्षी दल कह रहे हैं कि सत्तासीन पार्टी यदि पुनः सरकार बनाने में सफल हो गई तो आरक्षण समाप्त कर देगी। वहीं सत्ता–पक्ष कुछ राज्यों में मुसलमानों को दिए जा रहे आरक्षण पर सवाल खड़ा करके उसे संविधान विरुद्ध बता रहा है। राजनीति को दरकिनार करके यदि देखा जाए तो आरक्षण ऐसी संविधान प्रदत्त गारंटी है जिसके सहारे एक समतामूलक और समावेशी समाज की परिकल्पना की गई थी, और यह तब तक प्रासंगिक रहेगा जब तक सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विषमताएं और भेद–भाव जनित परिस्थितियां दूर नहीं होतीं।

आरक्षण सम्बन्धी प्रावधान संविधान में चार अलग–अलग स्थानों पर वर्णित हैं। अनुच्छेद 330 से 335 तक में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन–जातियों के लिए लोकसभा, विधानसभाओं तथा सरकारी नौकरी में आरक्षण के प्रावधान हैं। एंग्लो–इंडियन समुदाय के दो सदस्यों का लोकसभा में मनोनयन और रेलवे तथा डाक विभाग में दस वर्षों तक आरक्षण का आधार भी इन्हीं अनुच्छेदों में है। यहां महत्वपूर्ण है कि अनुसूचित जातियों के लिए छुआ–छूत जनित भेदभाव, जनजातियों के भौगोलिक एक सांस्कृतिक अलगाव तथा एंग्लो–इंडियन स मुदाय की सीमित संख्या उन्हें आरक्षण एवं मनोनयन का आधार प्रदान करती है।

दूसरे, संविधान के अनुच्छेद 15(3), 15(4) एवं 15(5) में महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा सामाजिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के लिए सरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थानों में दाखिला पाने को आरक्षण दिया है। वर्ष 2019 में संविधान संशोधन कर आर्थिक पिछड़ेपन को मान्यता देकर इस वर्ग के लिए दस प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया।

आरक्षण की संवैधानिक व्याख्या सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समय–समय पर की जाती रही है। इंदिरा साहनी प्रकरण (1992) में न्यायालय द्वारा व्याख्या दी गयी थी कि पिछड़े वर्ग की 'क्रीमी लेयर' को आरक्षण लाभ नहीं मिलना चाहिए, पदोन्नति में आरक्षण नहीं हो और 50 प्रतिशत से अधिक भी नहीं होना चाहिए।

तीसरे, ऐसे पिछड़े वर्गों, जिनका सरकारी नौकरियों में उचित प्रतिनिधित्व नहीं, के लिए संविधान के अनुच्छेद 16(4), 16(4ए) एवं 16(4बी) में पद आरक्षित किए गए हैं। वर्ष 2019 में संविधान में नया अनुच्छेद 16(5) जोड़कर आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लिए भी दस फीसदी नौकरियां आरक्षित की गई। चौथे, पंचायतों एवं नगरपालिकाओं में अनुसूचित जातियों, जनजातियों के लिए आरक्षण प्रावधान अनु. 243डी तथा 243टी में दिए हैं।

अनुसूचित जातियों और जनजातियों के राजनीतिक आरक्षण का आधार मूलतः कुछ वर्गों के प्रति छुआछूत बरतना और नागरिक अधिकारों का हनन बना था, सरकार और सरकारी नौकरियों में आरक्षण के माध्यम से पीड़ित वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करके इन सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन की अवधारणा संविधान में स्थापित की गई। क्योंकि छुआ–छूत का प्रसार केवल हिन्दू समाज में ही है, इसलिए अनुसूचित जातियों में मुसलमानों का उल्लेख नहीं है।

शुरुआत में आरक्षण के प्रावधान केवल अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए थे। पिछड़े वर्गों का आरक्षण सर्वोच्च न्यायालय में श्रीमती चम्पक दोराईराजन प्रकरण (1951) के दौरान केन्द्र बिन्दु में आया, अदालत ने कहा कि यद्यपि अनुच्छेद 16(4) पिछड़े वर्गों के लिए नौकरियों में आरक्षण का उल्लेख करता है, अनुच्छेद 15 में इसका जिक्र तक नहीं है। इसके बाद संविधान में पहला संशोधन किया गया और अनुच्छेद 15(4) जोड़कर सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश संबंधी आरक्षण का प्रावधान कर दिया गया।

वर्ष 1953 में पिछड़े वर्गों की दशा का अध्ययन करने के लिए पहला पिछड़ा वर्ग आयोग काका कालेलकर की अध्यक्षता में बनाया गया। दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग बीपी मंडल की अध्यक्षता में वर्ष 1979 में गठित किया गया जिसकी रिपोर्ट 1990 में लागू की गई थी। मंडल आयोग ने पिछड़े वर्ग के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की थी। मंडल आयोग की रिपोर्ट ही मुसलमानों को पिछड़े वर्गों में सम्मिलित कराती है। रिपोर्ट में कहा गया था कि दो प्रकार की मुसलमान जातियां पिछड़ी जाति मानी जाएंगी, पहली, वे जो धर्म परिवर्तन से पहले हिन्दू अछूत जातियां थी और, दूसरी, वे हिन्दू पिछड़ी जातियां जिन्होंने धर्म परिवर्तन के बाद भी अपना परम्परागत व्यवसाय जारी रखा हो। इसके बाद अनेक राज्यों ने मुसलमानों की कुछ पिछड़ी जातियों को आरक्षण लाभ देना शुरू कर दिया था।

आरक्षण की संवैधानिक व्याख्या सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समय–समय पर की जाती रही है। इंदिरा साहनी प्रकरण (1992) में न्यायालय द्वारा व्याख्या दी गयी थी कि पिछड़े वर्ग की 'क्रीमी लेयर' को आरक्षण लाभ नहीं मिलना चाहिए, पदोन्नति में आरक्षण नहीं हो और 50 प्रतिशत से अधिक भी नहीं होना चाहिए। इसके तुरन्त बाद संविधान संशोधन करके सरकार ने पदोन्नति में आरक्षण का आधार बरकरार रखा था। एक प्रकरण में 2007 में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि मैरिट व गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक दस वर्ष उपरान्त आरक्षण की समीक्षा करनी चाहिए।

संविधान में आरक्षण की अवधारणा उन लोगों के मुख्य धारा में समावेश का आधार बनी थी जो ऐतिहासिक अथवा अन्य कारणों से पीछे छूट गए थे। इसका अभिप्राय है, जो लोग पिछड़ेपन से बाहर आ गए हैं उन्हें आरक्षण लाभ नहीं मिलना चाहिए, ताकि अन्य पात्र पिछड़ों को आरक्षण दिया जा सके। अतः आरक्षण की सामयिक समीक्षा जरूरी है परन्तु वोटबैंक राजनीति के चलते ऐसा नहीं हो पाया। आरक्षण सरकार की सकारात्मक उपायों की समावेशी अवधारणा का प्रतिबिम्ब है। इन नीतियों को संविधान की मूल भावना के आलोक में ही लागू किया जाए, न कि सियासी हित–साधना के एक तंत्र के रूप में।

लेखक हरियाणा के पुलिस महानिदेशक रहे हैं।

चीन से कारोबारी असंतुलन

–जयंतीलाल भंडारी–

यकीनन इस समय चीन से आयात बढ़ने से कारोबार असंतुलन का ग्राफ लगातार बढ़ रहा है। हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक इलेक्ट्रॉनिक हार्डवेयर वस्तुओं के चीन से आयात को नियंत्रित करने के मद्देनजर शुरू की गई ऑनलाइन निगरानी प्रणाली के बावजूद नवंबर, 2023 से मार्च, 2024 के 5 महीनों में चीन से लैपटॉप एवं टैबलेट सहित कंप्यूटरों की आवक 47.1 प्रतिशत बढ़ गई है। इस अवधि में भारत ने चीन से 27.36 करोड़ डॉलर मूल्य के इलेक्ट्रॉनिक हार्डवेयर आयात किए हैं। यद्यपि इन उत्पादों के ताइवान और हांगकांग से भी आयात किए गए हैं, लेकिन उनकी तुलना में चीन से किए गए आयात का मूल्य कई गुना अधिक है।

हाल ही में 17 मई को विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने उद्योग चैंबर सीआईआई के सालाना वार्षिक सम्मेलन में उद्योग जगत को संबोधित करते हुए कहा कि चीन के साथ कारोबार असंतुलन एक बड़ा मुद्दा है। यह पिछले 20 वर्षों में पैदा हुआ है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2019–20 के बाद से चीन से होने वाले आयात में लगातार वृद्धि हुई है और आयात में 44 फीसदी का इजाफा हो चुका है जबकि चीन को होने वाला निर्यात तकरीबन स्थिर है। चीन के साथ सीमा पर चल रहे तनाव के बावजूद वहां से आयात में हो रही लगातार वृद्धि पर पहली बार किसी केंद्रीय मंत्री ने भारतीय उद्योग जगत को भी आड़े हाथों लिया और सम्मेलन में उपस्थित भारत के उद्योग जगत के सैकड़ों प्रतिनिधियों की तरफ चीन से हुई घुसपैठ के मद्देनजर इशारा करते हुए उन्होंने पूछा कि, क्या आप उसके साथ कारोबार करेंगे जो आपके ड्राइंग रूम में घुस कर आपके घर को नुकसान पहुंचा रहा है।

विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने बहुत ही स्पष्ट तरीके से यह सीख दी कि उद्यमियों को राष्ट्रीय हितों से जुड़ी संवेदनाओं का ख्याल रखना होगा। उन्होंने कहा कि, हमें चीन के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा की संवेदनशीलता को भी ध्यान में रखना होगा। जहां तक संभव हो भारत में बनायें, भारत में खरीदें। जो राष्ट्रीय हित में है वह लंबी अवधि में कारोबार के हित में भी होगा। उन्होंने कहा कि कारोबार की अपनी जरूरतें हैं लेकिन लंबी अवधि के लिए हमें घरेलू सोर्सिंग व उत्पादन को बढ़ावा देना होगा और इसी आधार पर हमें फैसला करना होगा।

उल्लेखनीय है कि पिछले वित्त वर्ष 2023–24 में चीन से आयात 44.7 प्रतिशत बढ़कर 70.32 अरब डॉलर से 101.75 अरब डॉलर हो गया, जबकि पिछले वित्त वर्ष 2023–24 में चीन को भारत का निर्यात 16.66 अरब डॉलर रहा। चीन बीते वित्त वर्ष 2023–24 में 118.41 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार के साथ भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है। भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार के मामले में चीन ने अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है।

चीन से आयात में वृद्धि के कारण चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा बढ़ गया है। चीन के साथ व्यापार घाटा 2018–19 में 53.57 अरब डॉलर था, वह बढ़ते हुए 2023–24 में 85.09 अरब डॉलर हो गया। विश्लेषण करें तो पाते हैं कि चीन से आयात में कमी नहीं आने के कई कारण हैं। भारत आवश्यक व रणनीतिक तौर पर बेहद जरूरी सेक्टर में भी चीन से आयातित उत्पादों पर काफी निर्भर है। यद्यपि चीन पर निर्भरता कम करने के जो रणनीतिक कदम उठाए गए, उनका अभी जमीनी तौर पर कोई विशेष असर नहीं दिखा है।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि पिछले एक दशक से स्वदेशी उत्पादों को हरसंभव तरीके से प्रोत्साहित करके चीन से आयात घटाने के प्रयास हुए हैं। वर्ष 2019 और 2020 में चीन से तनाव के कारण जैसे–जैसे चीन की भारत के प्रति आक्रामकता और विस्तारवादी नीति सामने आई, वैसे–वैसे स्थानीय उत्पादों के उपयोग की लहर देश भर में बढ़ती हुई दिखाई दी। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा बार–बार स्थानीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करने और वोकल फॉर लोकल मुहिम के प्रसार ने स्थानीय उत्पादों की खरीदी को पहले की तुलना में अधिक समर्थन दिया है। चीन से आयात किए जाने वाले दवाई, रसायन और अन्य कच्चे माल का विकल्प तैयार करने के लिए पिछले दो वर्ष में सरकार ने प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव (पीएलआई) स्कीम के तहत 14 उद्योगों को करीब दो लाख करोड़ रुपये आवंटन के साथ प्रोत्साहन सुनिश्चित किए हैं।

पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़, दो बदमाशों के पैर में लगी गोली

संवाददाता—गोण्डा। जिले की कर्नलगंज पुलिस और एसओजी टीम से बदमाशों की मुठभेड़ हो गई। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में दो बदमाश घायल हुए हैं। जिन्हें पुलिस ने अस्पताल में भर्ती कराया है। जहां पर उनका इलाज चल रहा है। गिरफ्तारी के दौरान पुलिस ने इनके कब्जे से लाखों रुपए के सोने चांदी की जेवरात नगदी कारतूस बाइक बरामद किया है। चोरी गए तारकोल बरामद करने के लिए पुलिस ने कई जगह चेकिंग लगा रखा था। दरअसल तरबगंज थाना क्षेत्र के देवरदा गांव के रहने वाले संजीव कुमार तिवारी पुत्र अयोध्या प्रसाद तिवारी ने उमरी बेगमगंज पुलिस को शिकायती पत्र देते हुए कहा था कि वह पक्की सड़क बनवाने का काम करते हैं। क्षेत्र के शुक्ल पुरवा के पास उनका तारकोल से भरा हुआ ड्रम रखा हुआ था। बीती रात अज्ञात लोगों ने पिकअप गाड़ी से तारकोल का 9 ड्रम चुरा लिया। पीड़ित के शिकायती पत्र पर उमरी बेगमगंज पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए बिना देरी किए घटना की सूचना सभी महत्वपूर्ण रास्तों पर उपलब्ध कराई। जिससे अलर्ट हुई पुलिस ने जगह–जगह चेकिंग चालू कर दिया। भाग रहे आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस ने बन्दरेबाबा मार्ग से चचरी जाने वाले मार्ग पर हरिसहायपुरवा खजुरिया के पास संदिग्ध आरोपियों की घेराबंदी कर पकड़ने का प्रयास किया। लेकिन आरोपियों ने पुलिस से बचने के प्रयास में हमला करने की कोशिश की। बचाव में कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने फायरिंग किया। जिससे अमेठी जनपद के जगदीशपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत गांधीनगर का रहने वाला सलमान पुत्र जलील उर्फ जिल्लू और लक्ष्मण पुत्र जिल्ला के पैर में गोली लगने से घायल हो गया। वहीं पुलिस टीम ने आरोपी के तीसरे साथी गोरखपुर जनपद के कैंपियरगंज थाना अंतर्गत हगना गांव अलीगढ़ का रहने वाले अरुण पुत्र छविलाल को दौड़ा कर गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस के पूछताछ में गिरफ्तार हुए आरोपियों ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए बताया कि उनका अपना एक संगठित गिरोह है। जो आर्थिक लाभ कमाने के लिए गांव गांव घूमकर भीख मांग कर खाने की आड़ में रेकी कर लूट और चोरी जैसे घटनाओं को अंजाम दिया करते हैं। पकड़े गए चोरों ने बताया कि 15 मई के रात को करनैलगंज थाना क्षेत्र के सूबेदार पुरवा में घर में घुसकर अलमारी से सोने चांदी के जेवर और नगदी चोरी किए थे। पकड़े गए आरोपियों ने बताया कि 19 मई के रात को इटियाथोक थाना क्षेत्र के पंडित पुरवा गांव में ताला तोड़कर सोने चांदी का जेवर चोरी किया था। आरोपियों ने बताया कि 12 मई के चचरी जाने वाले मार्ग पर हरिसहायपुरवा खजुरिया के पास संदिग्ध आरोपियों की घेराबंदी कर पकड़ने का प्रयास किया। लेकिन आरोपियों ने पुलिस से बचने के प्रयास में हमला करने की कोशिश की। बचाव में कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम ने फायरिंग किया। जिससे अमेठी जनपद के जगदीशपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत गांधीनगर का रहने वाला सलमान पुत्र जलील उर्फ जिल्लू और लक्ष्मण पुत्र जिल्ला के पैर में गोली लगने से घायल हो गया। वहीं पुलिस टीम ने आरोपी के तीसरे साथी गोरखपुर जनपद के कैंपियरगंज

हाईवे पर खड़े ट्रक में दूसरे ट्रक ने मारी टक्कर, चालक और खलासी की मौत

संवाददाता—कुशीनगर। जनपद के तमकुहीराज थानाक्षेत्र के कौवापट्टी गांव के समीप फोरलेन किनारे स्थित इंडियन आयल पेट्रोल पम्प के सामने खड़े ट्रक में बुधवार रात तेज रफ्तार अनियंत्रित ट्रक ने टक्कर मार दी। जोरदार टक्कर में पहले से खड़ा गेहूं लदा ट्रक पलट गया, जबकि पीछे से टक्कर मारने वाला पशु आहार लदे ट्रक के परखच्चे उड़ गए। इस दुर्घटना में ट्रक स्वामी कसया निवासी विनोद गुप्ता 50 का पैर कट गया। जबकि ट्रक पर चालक व खलासी का कार्य करने वाले पटहेरवा थानाक्षेत्र के अजय यादव 25 निवासी गगलवा व नागेन्द्र यादव 35 निवासी सुलतानपुर की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई। सूचना पाकर मौके पर पहुंची तमकुहीराज पुलिस ने एनएचएआई के एंबुलेंस से गंभीर रूप से घायल ट्रक स्वामी विनोद गुप्ता को इलाज के लिए सीएचसी तमकुही भेजवाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उन्हे जिला अस्पताल पडरौना व मेडिकल कालेज गोरखपुर रेफर कर दिया। जहां उनकी हालत नाजुक बताई जा रही है। दूसरे तरफ पुलिस फोरलेन पर दुर्घटना ग्रस्त दोनो ट्रक को क्रेन के माध्यम से फोरलेन से हटवाकर आवागमन सुचारु रूप से शुरू कराने व दोनों शवों को पोस्टमार्टम को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने देवीपाटन में की पूजा, गौसेवा भी की

संवाददाता—बलरामपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने चुनावी व्यस्तता के चलते करीब दो महीने बाद देवीपाटन मंदिर में रात्रि विश्राम किया। बुधवार की शाम जनसभा के बाद मंदिर पहुंचे और बृहस्पतिवार की सुबह उन्होंने मंदिर में पूजन अर्चन किया। मां पाटेश्वरी देवी की आरती उतारने के साथ ही पूजन किया। इसके बाद मंदिर की गौशाला का भ्रमण किया। उन्होंने गायों को चारा खिलाने के साथ ही उनकी व्यवस्था को परखा। मंदिर प्रशासन को गर्मी को देखते हुए समुचित प्रबंध सुनिश्चित करने को कहा। मुख्यमंत्री जब भी मंदिर आते हैं और रात्रि में विश्राम करते हैं तो गौसेवा उनकी दिनचर्या में रहता है। बृहस्पतिवार को भी वह गौशाला पहुंचे और गायों को चारा और गुड़ खिलाया। इसके पूर्व उन्होंने माता रानी का पूजन कर फूल की माला अर्पित की और नमन करके आर्शीवाद मांगा। मंदिर से हेलीपैड के लिए निकले तो कुछ लोग खड़े हुए थे। उनका हाल पूछा और एक बच्ची भी खड़ी थी। सीएम ने बच्ची को दुलारते हुए एक चाकलेट दिया। इसके साथ ही सभी का अभिवादन करते हुए हेलीपैड पहुंचे और गोरखपुर के लिए रवाना हो गए। इस दौरान उनके मंदिर के महंत मिथलेश नाथ योगी मौजूद रहे। श्रावस्ती संसदीय व गैसडी विधानसभा के लिए शनिवार को मतदान होना है। मतदान के पूर्व सीएम योगी ने एक तरफ जहां जनसभा कर लोगों का उत्साह बढ़ाया। वहीं, रात्रि विश्राम कर यह संदेश भी दिया कि यह उनका घर ही है। सुबह भले ही उन्होंने कोई राजनीतिक सभा या बैठक नहीं की, लेकिन इशारें– इशारों में राजनीतिक संदेश दिया जिससे लोगों में चर्चा भी रही। उनकी मौजूदगी से ही आम लोगों में परिवार के मुखिया के होने का एहसास होता रहा। इसका असर भी सियासी तौर देखा जा रहा है।

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

संवाददाता—देवरिया। रेलवे स्टेशन के समीप डाउन ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। घटना गुरुवार की सुबह करीब 11 बजे के आसपास की है। मृतक युवक की पहचान भाटपाररानी कस्बा के वार्ड नंबर 10 सोहनपार निवासी रवि यादव (32) वर्ष पुत्र अभय यादव उर्फ नाटा के रूप में हुआ है।

परिजनों के अनुसार रवि यादव मानसिक रूप से डिस्टर्ब चल रहा था। घर पर ही रहता था। उसकी शादी हुई थी लेकिन पत्नी कुछ वर्षों पूर्व छोड़कर चली गई थी। गुरुवार को वह रेलवे ट्रैक पार कर रहा था कि स्टेशन से कुछ दूर आगे प्लेटफार्म नम्बर दो के समीप डाउन ट्रैक पर सीवान की तरफ जाने वाली आम्रपाली एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट पर आ गया। जिससे मौके पर ही उसकी दर्दनाक मौत हो गई। सूचना मिलने पर पहुंचे परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शव को अंतिम संस्कार के लिए लेकर चले गए।

शार्ट सर्किट से टेलर की दुकान में लगी आग, दो लाख का नुकसान

संवाददाता—देवरिया। बरहज नगर के मुख्य चौक स्थित तिवारी कटरा में एक टेलर(दर्जी) की दुकान में गुरुवार को तड़के शार्ट सर्किट से आग लग गई। आग से उसमें रखी सिलाई की मशीन और कपड़े जल कर खाक हो गए। आसपास के लोगों के सहयोग से आग पर काबू पाया जा सका। करीब दो लाख के सामान की क्षति हुई है। बरहज थाना क्षेत्र के पुराना बरहज निवासी याकूब मंसूरी पुत्र रमजान मंसूरी तिवारी कटरा में सूट सिलने की दुकान है। सुबह करीब साढ़े चार बजे रास्ते से गुजर रहे एक व्यक्ति ने कटरा से धुआं उठता देख आस–पास के दुकानदारों को सूचना। कटरा में धुंआ भरने से न तो कोई अंदर जा रहा था और न ही यह पता चल पा रहा था कि आग किस दुकान में लगी है। धुंआ कम होने के बाद लोग कटरे में घुसे और आग बुझाया, लेकिन तब दुकान में रखा कपड़ा, पेस्टीज और पांच सिलाई मशीन सहित करीब दो लाख का समान जल गया था। प्रथम दृष्टया शार्ट सर्किट से ही आग लगने की बात सामने आ रही है।

सघन जांच अभियान में 12 लाख नेपाली करेंसी बरामद

संवाददाता—महराजगंज। परसामलिक थाना क्षेत्र के सीमावर्ती चौकी सेवतरी के ग्राम पंचायत मरजादपुर पहाड़ी टोला एसएसबी रोड पर बुधवार की देर शाम थानाध्यक्ष प्रिंस कुमार व एफएसटी तथा एसएसबी की संयुक्त टीम ने लोकसभा सघन जांच अभियान चलाकर वाहन चेकिंग के दौरान नेपाली बाइक पर सवार दो लोगों के पास से बारह लाख नेपाली करेंसी बरामद की।

परसामलिक थाना क्षेत्र के सीमावर्ती चौकी सेवतरी के ग्राम पंचायत मरजादपुर के पहाड़ी टोला एसएसबी रोड पर देर रात पुलिस व एसएसबी तथा एफएसटी की संयुक्त टीम में थानाध्यक्ष प्रिंस कुमार, चौकी प्रभारी अमित कुमार सिंह,एसएसबी टीम में एसआई हर दयाल सिंह,एफएसटी के संतोष कुमार वर्मा, उपनिरीक्षक शिवम राय, कांस्टेबल अवनीश कुमार यादव वाहन चेकिंग कर रहे थे। तभी नेपाली प्लस्र बाइक पर सवार दो युवकों को रोककर तलाशी ली, जिनके पास से बारह लाख रुपये नेपाली मुद्रा बरामद हुई। दोनों युवकों की पहचान नेपाल राष्ट्र के दिपेश मल्ल पुत्र जयस्वर मल्ल निवासी सैना मैना जिला रूपन्देही व भुपेन्द्र कामी पुत्र मने कामी निवासी लाकोरी थाना दुग्धेश्वर जिला दैलिख के रूप में हुई।

लाखों श्रद्धालु पहुंचे अयोध्या, मां सरयू में स्नान करने के बाद किए रामलला के दर्शन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। आस्था को कमजोर नहीं कर सकी सूर्य भगवान की चिलचिलाती धूप जहां मैं महीने में तापमान का पारा 40 पर हो गया है 45 डिग्री तक भी पहुंच जाता है ऐसे में गुरुवार को वैशाख बुद्ध पूर्णिमा के दिन श्रद्धालुओं के जन सैलाब ने सभी को पीछे छोड़ दिया और आस्था की डगर पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे श्री राम लला का दर्शन पूजन कर अपने आप को धन्य कया। ब्रह्म मुहूर्त से ही अयोध्या में पहुंचे भक्त पहले मां सरयू के पावन जल में स्नान कर तत्पर स्थित नागेश्वर नाथ महादेव का अभिषेक करने के उपरांत राम पथ पर भक्त हनुमान श्री राम लला और कनक भवन के दर्शन के लिए चल पड़े और यह सिलसिला बुद्ध पूर्णिमा पर पूरे दिन चला रहा।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के बाद यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या कई गुना बढ़ गई है। यहां हर रोज ही बड़ी संख्या में दर्शनार्थी और पर्यटक आ रहे हैं।जय श्रीराम के नारों के संग बड़ी संख्या में उमड़े भक्तों ने सरयू में डुबकी लगाई। भीषण गर्मी और चटक धूप ने भी श्रद्धालुओं के धैर्य की परीक्षा ली। भीड़ के चलते मुख्य मार्ग पर जाम की स्थिति बनी रही। सुबह से ही मंदिरों में दर्शन पूजन का तांता लगा रहा।बुद्ध पूर्णिमा वैशाख मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। इसे वैशाख पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन को भगवान गौतम बुद्ध की जयंती और उनके निर्वाण दिवस दोनों के ही तौर पर मनाया जाता है और इसी दिन भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था ऐसी मान्यता है कि वैशाख की पूर्णिमा को ही भगवान विष्णु ने अपने नौवें अवतार भगवान बुद्ध के रूप में जन्म लिया। कहा जाता है कि बुद्ध पूर्णिमा के दिन पवित्र नदियों में किया गया स्नान कई जन्मों के पापों का नाश करता है।

चाय की दुकान में अकेली सो रही बुजुर्ग महिला को पीटकर जेवर लूटे

संवाददाता—कुशीनगर। जनपद के तमकुहीराज थानाक्षेत्र के हरिहरपुर में गांधी हॉस्पिटल के बगल में छोटी सी चाय की दुकान चलाकर रोजी रोटी चलाने वाली एक बुजुर्ग महिला से लूटपाट करने का मामला प्रकाश में आया है। बदमाशो ने बुजुर्ग महिला को मारपीट कर लहूलुहान कर दिया तथा उसके कान में मौजूद सोने के गहने व दुकान में रखे जेवर लेकर मौके से फरार हो गए। पीड़ित महिला सोने के जेवर की शौकीन थी तथा दुकान में अकेले सोती थी। घटना की जानकारी के बाद मौके पर पहुंची पुलिस व फोरेंसिक टीम घटना की जांच पड़ताल में जुटी हुई है। तमकुहीराज कस्बे के हरिहरपुर वार्ड नंबर 2 यशोधरा नगर में स्थित गांधी हॉस्पिटल के बगल में झोपड़ी में गिरजा देवी 65 चाय की दुकान संचालित करती है। बुधवार देर रात्रि दुकान में घुसे अज्ञात बदमाशो ने महिला के सिर पर लोहे के रॉड से वार कर लहूलुहान कर दिया तथा

उसके कान में पहने सोने के गहने व दुकान में रखा जेवर लेकर फरार हो गए। घटना के समय पीड़ित महिला दुकान में अकेले मौजूद थी। घटना के बाद चोट के कारण महिला बेहोश होकर लहूलुहान दुकान में गिरी पड़ी थी। गुरुवार सुबह आसपास के मौजूद लोगो को घटना की जानकारी होने पर उन्होंने मामले की जानकारी मुकामी पुलिस को दिया। घटना संज्ञान में आने पर मौके पर फोरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष अतुल श्रीवास्तव ने महिला को इलाज के लिए सीएचसी तमकुही भेजवाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद पीड़ित बुजुर्ग महिला की हालत नाजुक होने की दशा में उसे चिकित्सकों ने जिला अस्पताल पडरौना रेफर कर दिया। पुलिस टीम घटना की बारीकी से जांच पड़ताल में जुटी रही। इस संबंध में थानाध्यक्ष अतुल श्रीवास्तव ने बताया की मामला प्रथम दृष्टया लूटपाट करने की नियत से की गई प्रतीत हो रही है। मामले की छानबीन की जा रही है।

बुद्ध पूर्णिमा पर हुई भगवान बुद्ध की पूजा

संवाददाता—श्रावस्ती। बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर अंतराष्ट्रीय पर्यटन स्थली श्रावस्ती बुद्धमं शरणं गच्छामि से गूंज उठी। अनुयायियों ने भगवान बुद्ध का जयंती समारोह धूमधाम से मनाया। बौद्ध भिक्षुओं एवं उपासकों ने श्रावस्ती तीर्थ क्षेत्र में प्रभातफेरी निकाल कर जेतवन महाविहार में आनंद बोधि वृक्ष की पूजा–अर्चना की। बौद्ध भिक्षुओं को भोजन दान भी किया गया। गोष्ठी भी आयोजित की गई। जिसमें बहराइच, बलरामपुर, गोंडा, फैजाबाद, बस्ती, सिद्धार्थनगर व श्रावस्ती समेत अन्य जिलों के बौद्ध अनुयायियों ने कार्यक्रम में शामिल होकर बुद्ध के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। गुरुवार को बुद्ध पूर्णिमा पर श्रावस्ती स्थित आनंद ज्ञानोदय तिस्य ध्यान भावना केंद्र पर तथागत भगवान बुद्ध की 2559वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस दौरान आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते हुए एडवोकेट पूजाराम सोनकर कहा कि भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधित तीनों महत्वपूर्ण घटनाएं–सिद्धार्थ के रूप में उनका जन्म, ज्ञान प्राप्ति व महापरिनिर्वाण बैशाख पूर्णिमा को ही घटित हुई। इसलिए बैशाख पूर्णिमा को त्रिविध पावनी पूर्णिमा के रूप में बौद्ध जगत में जाना जाता है। उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध करुणा व मैत्री के संवाहक थे। उनका अनुसरण करते हुए हम सभी को करुणा व मैत्री को अपने जीवन में उतारनी चाहिए। भंते श्रद्धा लोक महा थेरो ने कहा कि भगवान बुद्ध के आदर्शों को अपना कर मानव जीवन सफल बनाया जा सकता है। गोष्ठी से पहले बौद्ध भिक्षुओं व उपासकों की ओर से भारतीय बुद्ध बिहार से सहेट–महेट तक प्रभातफेरी निकाली गई। प्रभात फेरी में शामिल बौद्ध भिक्षु व उपासक तथा उपासिकाएं बुद्धमं शरणं गच्छामि, धम्म शरणं गच्छामि, संघ्म शरणं गच्छामि का उद्घोष करते हुए जेतवन महाविहार पहुंचे और पवित्र आनंद बोधि वृक्ष की पूजा–अर्चना कर जन कल्याण की कामना की। इसके बाद तीर्थ क्षेत्र का भ्रमण करते हुए बौद्ध भिक्षु व उपासक भारतीय बुद्ध बिहार वापस पहुंचे। यहां बौद्ध भिक्षुओं व उपासकों को भोजन दान किया गया। इस दौरान भंते संघानंद, भंते आनंदसागर, भंते देवेंद्र, भंते सुनील, पवन कुमार सिंह बौद्ध, बृजेश गुप्त, संकल्प भारती,राजकुमार गुप्ता, माया बौद्ध,भिक्षु व उपासक–उपासिकाएं मौजूद रहे। उपासक व उपासिकाओं ने बुद्ध के आदर्शों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।

गैस सिलेंडर से उठी चिंगारी से जले चार आशियाने

संवाददाता—बहराइच। भोजन बनाते समय गुरुवार सुबह फूस के चार आशियाने गैस सिलेंडर से लगी आग की चपेट में आ गए। सिलेंडर फटने से आग ने और विकराल रूप धारण कर लिया। घर में रखा कपड़ा, जेवर, नकदी, खाद्यान्न समेत सारा सामान जलकर नष्ट हो गया। सूचना मिलने पर पुलिस और दमकल कर्मियों ने पहुंचकर आग पर काबू पाया। राजस्व लेखपाल ने नुकसान का आंकलन कर रिपोर्ट तहसील प्रशासन को भेज दी है।

जरवलरोड थाने के आदमपुर पुरैनी बंधा गांव में सुबह लगभग दस बजे भोजन बनाने के लिए गैस जलाते समय गैस पाइप लीकेज से आग का भभका उठा। जिससे अचानक फूस के आशियाने में आग लग लगी। आग की लपटों से सनेही लाल, संगमलाल, प्रेम लाल, रोशन लाल के घर जलने लगे। इन चारों घरों घरों में रखा खाद्यान्न, कपडा, रुपया जेवर सहित सभी सामान जलकर नष्ट हो गया। घर में रखे गैस सिलेंडर फटने से आग की ऊंची लपटें उठने लगीं। चारों तरफ चीफ पुकार मच गई। सूचना मिलने पर जरवलरोड पुलिस और दमकल कर्मियों ने पहुंचकर आग पर काबू पाया। राजस्व लेखपाल रुपेन्द्र कुमार सिंह ने मौके पर पहुंचकर आग से हुए नुकसान का आंकलन कर रिपोर्ट तहसील प्रशासन को भेज दी है। राजस्व निरीक्षक वाहिद कमाल ने बताया कि जले चार में से तीन घर आवासीय हैं। पीडितों को त्वरित सहायता और राहत सामग्री दी जा रही है।

नहर में डूबी किशोरी का 24 घंटे बाद मिला शव

संवाददाता—बहराइच। मूर्तिहा के हरखापुर निवासिनी किशोरी कुवार दोपहर पुल के किनारे गई थी। तभी अचानक पैर फिसलने से वह नहर में गिरने से बह कर लापता हो गई थी। बुधवार देर शाम अंधेरा होने से रेस्क्यू का अभियान बंद कर दिया गया। गुरुवार दोपहर उसका शव मोतीपुर की सरहद हंसुलिया के समीप मिला है। मूर्तिहा कोतवाली इलाके में स्थित हरखापुर ग्राम की रहने वाली सुलेखा (16) पुत्री प्रहलाद बुधवार दोपहर 24 नंबर पुल पर टहल रही थी। तभी अचानक पैर फिसलने से वह नहर में गिर गई। लोगों की सूचना पर परिजन मौके पर पहुंचे । किशोरी के नहर में डूबने की जानकारी होने पर तहसीलदार अंबिका प्रसाद चौधरी व कोतवाल अमितेंद्र कुमार पुलिस टीम के साथ मौके पर उसकी तलाश शुरू करायी थी, लेकिन देर रात तक उसका कोई पता नहीं चल सका। गुरुवार दोपहर मुर्तिहा व मोतीपुर थाने की सीमा पर स्थित हंसुलिया नहर में किशोरी का शव मिला है। मोतीपुर एसएचओ ददन सिंह ने बताया कि हरखापुर की रहने वाली किशोरी का गुरुवार दोपहर में नहर में शव उतराता मिला है।

श्री रघुनाथ भवन के महंत बने अंगद दास महाराज

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। अयोध्या धाम में लक्ष्मण घाट स्थित श्री रघुनाथ भवन के महंत बने अंगद दास महाराज। वैष्णो सनातन परंपरा के अनुसार अयोध्या के संतों महंतों ने श्री रघुनाथ भवन में गुरुवार को अंगद दास को कंठी चद्दर और तिलक देकर के महंत बनाया।

नवनियुक्त महंत अंगद दास महाराज ने बताया कि सनातन परंपरा और श्री रघुनाथ भवन की परंपरा का पालन जीवन भर करता रहूंगा उन्होंने कहा कि पूर्वाचार्यों द्वारा परंपरा जो परंपरा चलती आ रही है इस परंपरा का निर्वहन मैं भी करुंगा मंदिर में उत्सव सवैया ठाकुर जी की पूजा आरती भोग राग निरंतर चलता रहेगा और मंदिर के विकास के लिए आश्रम से जुड़े भक्तों के लिए निरंतर कार्य करता रहूंगा।

महंती समारोह में श्री राम वल्लभा कुंज वेदांती मंदिर के अधिकारी राजकुमार दास , महा त्यागी महंत सीताराम दास, नया शीश महल के महंत रामलोचन दास राजन बाबा, श्री राम आश्रम के महंत जयरामदास,तेरा भाई त्यागी खाक चौक के महंत बृजमोहन दास , करतलिया बाबा आश्रम के महंत बालयोगी राम दास, जयसवाल मंदिर के महंत श्यामसुंदर दास, नागा राम लखन दास सहित सैकड़ो संतों महंतों ने श्री रघुनाथ भवन का महंत अंगद दास महाराज को बनाया।

गर्भवती महिला की फंदे से लटकती मिली लाश

संवाददाता—बहराइच। एक गर्भवती महिला की लाश घर में साड़ी के फंदे से लटकती मिली है। महिला की सात माह पूर्व शादी हुई थी। वह पांच माह के गर्भवती थी। सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में लाश पोस्टमार्टम को भेज दिया है। रुपईडीहा थाने के चरदा गांव निवासिनी 19 वर्षीय शांति श्रीवास्तव पत्नी सत्यम श्रीवास्तव का शव बुधवार रात उसके ही घर में साड़ी के फंदे से लटकता हुआ मिला है। शांति श्रीवास्तव का विवाह 29 अक्टूबर 2023 को रुपईडीहा के चरदा गांव में सत्यम नाम के युवक के साथ हुआ था। सत्यम मेडिकल स्टोर पर काम करते हैं। शांति श्रीवास्तव गर्भवती थी। पति सत्यम ने बताया कि वह घर पर आए तब उनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। कुछ देर पत्नी के साथ बैठे और फिर वहां से अपने मेडिकल के लिए निकल गए। जैसे ही वह मेडिकल पहुंचे उनके पिता की मोबाइल पर कॉल आई कि पत्नी की हालत सही नहीं है। अपने घर पहुंचे तो उन्होंने अपनी पत्नी को फांसी के फंदे से लटकता हुआ पाया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में शव लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है।

बिसुही जंगल में भीषण आग, 35 बीघे में बेशकीमती पेड़ जले

संवाददाता—गोण्डा। धानेपुर इलाके के बिसुही जंगल में बुधवार की रात तकरीबन नौ बजे अचानक आग लग गई। इससे बड़ी संख्या में पेड़ पौधे जलकर राख हो गए जिससे वन संपदा को भारी नुकसान हुआ है। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया है। धानेपुर थाना क्षेत्र कुवानों रेंज क्षेत्र के बिसुही नदी का आसपास इलाके के बिसुही जंगल में बुधवार की रात तकरीबन नौ बजे अचानक जंगल में भीषण आग लग गई। ग्रामीण जब जंगल की तरफ गए तो देखा कि आग लगी हुई है। इस पर लोगों में हड़कंप मच गया। लोगों ने तत्काल इसकी सूचना वन विभाग को दी। मौके पर वन विभाग की टीम पहुंचकर पहले ग्रामीणों के साथ आग पर काबू पाने का प्रयास किया लेकिन विफल रही। आग की लपटों के आगे टिक नहीं सके। इस पर फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। इसके बाद फायर ब्रिगेड की दो गाड़ियां पहुंची और आग बुझाने में जुट गई। इस बीच तेज हवा के कारण आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। करीब सात घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद दमकल की गाड़ियों ने आग काबू पाया। आग से जंगल क्षेत्र के दर्जनों बीघे भूमि में लगे पेड़ पौधे जलकर राख हो गए। वन विभाग के अनुसार लाखों रुपये के कीमती पेड़ और पौधे आग में जलकर राख हो गए। इसमें सबसे ज्यादा खैर का पेड़ रहा। इसके अलावा जामुन व बबूल के पेड़ लगे हुए थे। रेंजर जेपी गुप्ता ने बताया कि एक व्यक्ति कि ओर से आग लगाने की बात सामने आई है। पहले भी उसकी ओर से ऐसी हरकत की जा चुकी है कारवाई कराई जायेगी। आग से सात एकड़ जंगल एरिया जला है। जिससे वन संपदा को भारी नुकसान हुआ है इसका विस्तृत आकलन किया है जा रहा है।

छह जून को विदेश में वैकेशन पर निकल जाएंगे राहुल-अखिलेश -अमित शाह

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि एक तारीख को चुनाव समाप्त हो जाएगा।होगा या नहीं होगा। जनता से उन्होंने इसका जवाब मांगा। उत्तर आया हो जाएगा। काउंटिंग कब है। जवाब मिला चार जून को। उसके बाद गृहमंत्री ने कहा कि दोनों शहजादे राहुल बाबा व अखिलेश जी ने छह जून के लिए टिकट बुक करा दिया है। इन्हें विदेश में वैकेशन पर जाना है। कहा कि अरे राहुल बाबा, हम तो यही जन्में, यही पले बढ़े और यहीं पर हमारी चिता मिट्टी हो जाएगी। हम तो जीते भी यहीं हैं। मरते भी यहीं हैं। थाइलैंड, बैंकाक जाने वाले राहुल बाबा हैं तो दूसरी ओर 23 साल तक एक भी छुट्टी लिये बगैर दीपावली के दिन भी जवानों के साथ मिठाई खाने वाले नरेन्द्र मोदी हैं। इन दोनों के बीच आपको तय करना है कि प्रधानमंत्री किसे बनाना है। गृहमंत्री गुरुवार को बीएसए ग्राउंड में भाजपा प्रत्याशी सांसद जगदंबिका पाल के समर्थन में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। संबोधन की शुरुआत करते ही उन्होंने कहा कि चार सौ पार करना है कि नहीं। जनता से आवाज आई करना है। फिर उन्होंने लोगों से जयहिंद का नारा लगवाया।

उन्होंने कहा कि सबसे पहले आज बुद्ध पूर्णिमा है। पाल जी को धन्यवाद करते हैं कि उनकी वजह से यहां आने का मौका मिला। बुद्ध ने जीवन जीने का रास्ता दिखाया। जब यहां आया हूं यहां से सांसद रहे माधव प्रसाद त्रिपाठी को नमन करता हूं। पांच चरण का चुनाव समाप्त हो गया है। इसमें 310 सीट भाजपा पा चुकी है। इंडी का सूपड़ा साफ हो गया है। राहुल जी सुन लो इस बार 40 सीट नहीं पा रहे हैं। सपा को तो 4 सीट भी नहीं मिलेगी। यहां से पाल जी सांसद बनेंगे तो मोदी जी भी प्रधानमंत्री बनेंगे। यदि इंडी गठबंधन की सरकार बनी तो कौन प्रधानमंत्री बन सकता है। शरद पवार, लालू बनेंगे क्या, राहुल बन सकते हैं क्या। राहुल जी यह देश परचून की दुकान नहीं है। मोदी जी के अलावा पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दे सकता है क्या। मोदी का परिवार 130 करोड़ है। पाक अधिकृत कश्मीर अपना है। इसे हम लेकर रहेंगे। यह भारत का है, इसे हम लेकर रहेंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेता कहते हैं कि पाक के पास एटम बम है तो हमारे पास एटम बम जैसा जिगर रखने वाले नेता हैं। मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भारत दुनिया में 11वें नंबर की अर्थव्यवस्था थी। मोदी जी के 10 वर्षों के कार्यकाल में भाजपा पांचवें नंबर की अर्थव्यवस्था बनी। पाल को जिता दो। मोदी जी प्रधानमंत्री बनेंगे। भारत पांच वर्ष के भीतर दुनिया की तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बनेगी।

उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार बनी तो आरक्षण बरकरार रहेगा। मैं आज डुमरियागंज की भूमि पर डंके की चोट पर कहता हूं। हम धर्म के आधार पर मुस्लिम आरक्षण समाप्त कर देंगे। उन्होंने केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि देश के गरीबों के लिए ढेर सारे काम हमारी सरकार ने किया है। चार करोड़ गरीबों को आवास देने का काम मोदी जी ने किया। कहा कि करोड़ गरीबों के घर में नल से जल पहुंचा। 10 करोड़ गरीबों के घर एलजी का सिलेंडर। 80 करोड़ गरीबों तक 5 किलो अनाज मुफ्त में भेजा। 7 करोड़ गरीबों को आयुष्मान भारत योजना को 5 लाख तक का फायदा दिया। एक करोड़ लखपती दीदी बन गई हैं। 3 करोड़ और बनाना है। 12 करोड़ शौचालय बनाए। इसके अलावा भी अन्य उपलब्धियों को गिनाया।

उन्होंने लोगों से सवाल किया कि उत्तर प्रदेश अपराधी सिर पर चढ़े थे या नहीं। इसका जवाब मिला नहीं। 2017 से हमारे नेता योगी आदित्यनाथ ने गुंडो को उल्टा लटका कर सीधा करना शुरू किया। आज पूरा उत्तर प्रदेश अपराधी मुक्त हो गया है। पहले यहां कट्टे बनते थे। अब यहां ब्रह्मोस मिसाइल बना रहा है। जरूरत पड़ी तो पाकिस्तान को नेस्तनाबूद करने का तोप का गोला भी यहीं से बनेगा। पहले यहां चोरी करने वाले गैंग होते थे। आज यहां गाड़ियां बन रही है। अब मेडिकल डिवाइस का जमावड़ा है। मैं आज आपको कहने आया हूं कि सपा के शासन में ढेर सारा भ्रष्टाचार हुआ था। उन्होंने लोगों से सवाल किया कि यूपी वालों क्या आप भ्रष्टाचारियों का साथ दोगे क्या। जवाब आया नहीं। भगवान बुद्ध के लिए हमने एक सर्किट बनाया। स्वदेश दर्शन योजना के तहत सर्किट में 350 करोड़ रुपये खर्च किया। उन्होंने भाजपा प्रत्याशी का जिक्र करते हुए कहा कि जगदंबिका पाल आपको जितना शांत दिखते हैं, उतने हैं नहीं। डुमरियागंज का विकास का मामला आता है तो यह मेरे जैसे व्यक्ति से भी लड़ जाते हैं। इस क्षेत्र में 800 किलोमीटर तक ग्रामीण सड़कें इन्होंने बनवाई हैं। 10 करोड़ से रेलवे यातायात के लिए बजट लाए। इसके बाद उन्होंने इस क्षेत्र के लिए जगदंबिका पाल द्वारा किए गए कार्यों को गिनाया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में एसएसबी का जो कार्य पेंडिंग में है, उसे मैंने पहले ही अप्रूव कर दिया है। उन्होंने कहा कि जगदंबिका पाल ने जितना इस क्षेत्र की सेवा की है, उतना कोई और नहीं कर सकता है।

गृहमंत्री अमित शाह बोले– देश की सुरक्षा को कमजोर करती हैं सपा–कांग्रेस

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा है कि कांग्रेस और सपा को वोट देने का मतलब देश की सुरक्षा को कमजोर करना है। यह लोग वोट बैंक के लिए देश की सुरक्षा तक ताक पर रख देते हैं। अकबरपुर के शिवबाबा में खचाखच भरे मैदान पर बीजेपी प्रत्याशी रितेश पांडेय के पक्ष में बृहस्पतिवार को जनसभा में बतौर मुख्य अतिथि गृहमंत्री ने सपा व कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस व सपा ने 70 सालों से अयोध्या में राममंदिर बनना रोक रखा था। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद पूरे देश का सपना साकार हुआ है। यह चुनाव रामभक्तों पर गोली चलाने वालों तथा रामभक्तों के बीच है। अयोध्या में मंदिर बन जाने का जिक्र करते हुए कहा कि अब रामविरोधियों को सबक सिखा देना है। उन्होंने मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का जिक्र करते हुए कहा कि राहुल गांधी व अखिलेश यादव निमंत्रण के बाद भी अयोध्या सिर्फ इसलिए नहीं गए क्योंकि इन्हें अपने घुसपैठियों वाले वोट बैंक की फिक्र थी। कांग्रेस पर आरोप लगाया कि वह पिछड़ों व अन्य वर्गों का हक मारकर मुस्लिमों को सौंप रही है।

भाजपा पिछड़ों व दलितों के आरक्षण पर डाका नहीं पड़ने देगी। गृहमंत्री ने कहा कि कांगेस के राज में पाकिस्तान से जब तब आतंकी आकर धमाका कर जाते थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पुरी व पुलवामा हमले के दस दिन बाद ही पाकिस्तान में घुसकर आतंकियों का सफाया किया गया। अमित शाह ने कहा कि घमंडिया गठबंधन में पीएम ही तय नहीं है। वहां पांच साल बारी बारी पीएम बनने की तैयारी है। ऐसे लोग पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब कैसे दे सकते हैं। जो खुद कमजोर होगा वह देश को मजबूती कैसे दे सकेगा। यह सब सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संभव है। गृहमंत्री ने सोनिया, उद्धव, शरद पवार, ममता बनर्जी व स्टालिन का नाम लेते हुए कहा कि विपक्ष के ऐसे तमाम नेता सिर्फ अपने परिवार को आगे बढ़ाने की राजनीति कर रहे हैं। उन्हें बेटे, बेटी व दामाद को राजनीति में स्थापित करना है जबकि नरेंद्र मोदी देश के 140 करोड़ लोगों की समृद्धि तय करने के लिए दिन रात काम कर रहे हैं। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर भारत का हिस्सा है। इसे हम सब नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में फिर से भारत में वापस लाकर ही चैन लेंगे। सभा में प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद चौधरी, प्रत्याशी रितेश पांडेय, एमएलसी हरिओम पांडेय, जिलाध्यक्ष त्रयंबक तिवारी समेत पार्टी के कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

छह महीने से फरार पाक एजेंट जियाउल हक पर पुलिस ने रखा इनाम

संवाददाता–गोरखपुर। देशविरोधी गतिविधियों में लिप्त पश्चिमी चंपरण बिहार के रहने वाले पाकिस्तानी एजेंट जियाउल हक पर एटीएस ने इनाम की राशि 25 हजार बढ़ाकर 50 हजार रुपये कर दी है। वह पिछले छह महीने से फरार है। उस पर सेना की खुफिया जानकारी लीक करने के लिए रुपयों का लेनदेन करने का आरोप है। गिरफ्तारी के लिए एटीएस ने एसटीएफ और गोरखपुर पुलिस को भी उसकी फोटो और हुलिया भेजा है। उसके दो साथियों रियाजुद्दीन और इजहारुल हुसैन की गिरफ्तारी के बाद उसका नाम सामने आया था। यह भी पता चला था कि उसका गोरखपुर में भी आना–जाना था। दरअसल, एटीएस ने 10 नवंबर 2023 को गाजियाबाद के भोजपुर इलाके के अंसारिमान फरीदनगर निवासी रियाजुद्दीन और पश्चिमी चंपारण के शकरपुर के नरकटियागंज निवासी इजहारुल हक पर देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त पाए जाने पर केस दर्ज किया था। जांच में पता चला कि इनके गिरोह में पश्चिमी चंपारण के मझौलिया थाना क्षेत्र के जौकटिया वार्ड नंबर एक निवासी जियाउल हक भी शामिल है, जो मजदूरी के बहाने गोरखपुर के चौरीचौरा इलाके में कुछ समय के लिए रह चुका है। यह भी पता चला कि इन सभी का खाता है, जो मार्च 2022 में खोला गया था और उससे एक महीने में 75 लाख रुपये से अधिक का लेनदेन भी किया गया था। एटीएस के मुताबिक, विभिन्न ऐप के जरिए खाते से कई खातों में रुपये भेजे गए थे, जिसका इस्तेमाल देश और सेना की खुफिया जानकारी पाकिस्तान पहुंचाने में की गई थी। ऐप के जरिए पाकिस्तानी एजेंटों को रुपये भेजे गए थे।

एटीएस के मुताबिक, आरोपियों की मंशा थी कि वह कुछ ऐसा करते रहे, जिससे भारत सरकार अस्थिर हो जाए। राष्ट्र की सुरक्षा में सेंध लगाने की भी तैयारी थी, इस वजह से आरोपी की गिरफ्तारी के लिए एटीएस ने 25 हजार से इनाम बढ़ाकर 50 हजार कर दिया है, ताकि उसे दबोचा जा सके।

चुनावी खर्च में भाजपा के प्रवीण आगे तो इंडी प्रत्याशी लक्ष्मीकांत दूसरे नंबर पर

संवाददाता–संतकबीरनर। संतकबीरनगर जिले में प्रशासन की लेखा टीम ने प्रत्याशियों के चुनावी खर्च का लेखा–जोखा तैयार किया। अब तक चुनावी खर्च में भाजपा प्रत्याशी प्रवीण कुमार निषाद सबसे आगे हैं। जबकि इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी लक्ष्मी कांत उर्फ पप्पू निषाद दूसरे नंबर पर हैं। ट्रेजरी के वरिष्ठ कोषाधिकारी वैभव कुमार ने टीम के सदस्यों के साथ प्रत्याशियों के चुनावी खर्च का लेखा–जोखा जांचा। जिसमें बसपा प्रत्याशी नदीम अशरफ ने 6,96,450 रुपये खर्च किया हैं। जबकि भाजपा प्रत्याशी प्रवीण कुमार निषाद 39,37,669 रुपये खर्च कर चुके हैं। समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी लक्ष्मी कांत उर्फ पप्पू निषाद 34,18,159 रुपये खर्च किए हैं। सरदार पटेल सिद्धांत पार्टी के प्रत्याशी कुलदीप कुमार 25000 रुपये, प्रगतिशील समाज पार्टी के प्रत्याशी धीरज श्रीवास्तव 57110 रुपये, सर्वजन आवाज पार्टी के प्रत्याशी राजेंद्र यादव 3,35,662 रुपये, नवी भारतीय एकता पार्टी के प्रत्याशी सुभाष चंद्र दूबे 1,47,725 रुपये खर्च किए हैं। इसी तरह निर्दलीय प्रत्याशी आनंद कुमार गौतम 68067 रुपये, निर्दलीय प्रत्याशी मित्रसेन 73490 रुपये, निर्दलीय प्रत्याशी रामकृष्ण द्विवेदी 37185 रुपये और निर्दलीय प्रत्याशी सत्यवंत प्रताप 82430 रुपये खर्च किए हैं। अब अगला चुनावी खर्च का ब्यौरा चुनाव परिणाम आने के बाद जांचा जाएगा।

विज्ञान आश्रम पचरा में गूंजी साखी, सबद, रमैनी

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के विकास क्षेत्र पौली के कुआनो नदी के तट पर स्थित संतकबीर विज्ञान आश्रम पचरा में दो दिवसीय सत्संग व भन्डारा आयोजित हुआ। कार्यक्रम में दूर–दराज से आए कबीर पंथी भक्तों ने निर्गुण भजनों का भरपूर आनंद उठाया।

सत्संग में जौनपुर जनपद से पधारे कबीर पंथी संत धन्नी साहब ने सद्गुरु कबीर साहब के निर्गुण भजनों के माध्यम से भक्तों के अन्दर निराकार ब्रह्म के प्रति भक्ति व प्रेम रस का आनन्द भर दिया।

वहीं कबीर साहब कि वाणी से आध्यात्मिक रहस्यवाद एवं गुणातीत परमात्मा के विषय की जानकारी देते हुए भक्ति भाव के रस से सराबोर कर दिया। कहत कबीर सुनो भाई साधो..., जन्म–जन्म का फेरा..., हमारे गुरु पूरन दातार... व ए री सखी मोरे पिया घर आए..., घट ही में अविनाशी साधो..., जरे बिन बालम अइसन श्रृंगार... आदि भजनों को सुना कर पूरे पंडाल को भक्ति मय कर दिया। इस मौके आश्रम के महन्थ बाबा सुकृत दास साहब, ग्राम प्रधान रमेश यादव, महेन्द्र, प्रेम चौधरी, रूपनरायन माझी, बासुदेव चौधरी, श्रीनाथ तिवारी, कृष्ण चन्द माझी सहित तमाम कबीर पंथी भक्त मौजूद रहे।

चुनाव प्रचार के दौरान बंधे से नीचे गिरे भाजपा नेता, घायल, हालत गंभीर

संवाददाता–गोरखपुर। चौरीचौरा विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता व जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि दीपक जायसवाल उर्फ दीपू चुनाव प्रचार के दौरान बंधे से गिर गए। चेहरे पर गंभीर चोट लगने के कारण इलाज के जिले के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। भाजपा नेता दीपक जायसवाल ब्रह्मपुर के ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि राघवेंद्र यादव, चौरीचौरा के पूर्व चेयरमैन ज्योति प्रकाश गुप्ता व अन्य कार्यकताओं के साथ बृहस्पतिवार को चौरीचौरा विधानसभा क्षेत्र के डुमरैला के बंधे पर भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में चुनाव प्रचार करने गए थे। बंधे पर प्रचार के दौरान ही दीपक जायसवाल का पैर फिसल गया और वह बंधे से गिर गए। आसपास के लोगों ने भाजपा नेता को उठा कर इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया जहां उनका इलाज चल रहा है।

हल्की बारिश, उमस से मिली राहत

संवाददाता–गोरखपुर। पूर्वी यूपी में पिछले तीन दिन से बादल छाए हुए हैं। आज सुबह से हल्की बारिश हुई। बारिश की रिमझिम फुहारों से गर्मी से राहत मिली है । लगातार प्रचंड गर्मी से जूझ रहे पूर्वी यूपी में पिछले तीन दिन से आसमान में बादल मौजूद हैं। इसकी वजह है पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता। इसके अलावा नेपाल के पहाड़ों से टकराकर लौट रहे बादल भी यहां जमे हुए हैं। पश्चिम बंगाल से पूर्वी यूपी की तरफ नम हवाएं आ रही हैं। इससे एक सिस्टम बन गया है। हालांकि इससे दिन के तापमान पर ज्यादा असर नहीं पड़ा है। मंगलवार व बुधवार को दिन का अधिकतम तापमान के करीब रहा। रात का तापमान भी इस दौरान सामान्य से अधिक रहा।

ओपीडी में चर्म रोग के पहुंच रहे अधिक मरीज

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले में तेज धूप व गर्मी के कारण चर्म रोगियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। जिला अस्पताल की ओपीडी में सबसे अधिक चर्म रोगियों की संख्या रही। जिला अस्पताल के चर्म रोग विभाग के वाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) में दो सौ रोगी पहुंचे। इन मरीजों में अधिकांश के शरीर में बर्न व खुजलाहट की समस्या रही। चिकित्सक मरीजों को आवश्यक दवाएं देकर घर भेज दिए। तेज धूप, धूल व गर्मी की वजह से होने वाले पसीने चर्म रोगों को जन्म दे रहे हैं। अधिकांश लोग घमौरियों से परेशान हैं। पूरे शरीर पर लाल–लाल दाने निकल रहे हैं। बच्चों व कुछ बड़े लोगों के दाने पक भी जा रहे हैं। उनसे मवाद आने की आशंका बन रही है। इसके अलावा खाज, खुजली, दाद, चक्कते लोगों को परेशान कर रहे हैं।

जिला अस्पताल के चर्म रोग विभाग के ओपीडी में प्रतिदिन 150 से 200 रोगी पहुंच रहे हैं। जब कि इसके पूर्व इन मरीजों की संख्या सौ के लगभग रहा करती थी। जिला अस्पताल के चर्म रोग विशेषज्ञ डा. एसबी गौतम ने बताया कि स्वीमिंग पूल और नदियों व पोखरों के अलावा धूप में बच्चे नहाने जाते हैं, इस कारण भी त्वचा की समस्या बढ़ जाती है। जिस कारण एलर्जी, खाज–खुजली होने लगती है। बीमारियों से बचने के लिए लोगों को एहतियात बरतने की जरूरत है। गर्मी के मौसम में तेज धूप से बचकर रहना चाहिए। इसी के साथ अपने स्वास्थ्य को बिलकुल ठीक रखने के लिए अधिक से अधिक तरल पदार्थों का सेवन करें।

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
प्रकीर्णवाद संo 215/2023
अदालत–श्रीमान द्वादश अति0 सिविल जज (जू0डी0) महोदय बस्ती
जिला–बस्ती
राम भरोस (मृतक)
बनाम
गीता देवी

1. गीता देवी उम्र 48 वर्ष पत्नी शंकर ग्राम कटरिया तप्पा दुबौलिया परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 23–07–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 23 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज जो जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा दरख्वास्त हुसूल हुक्म मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश
(आर्डर 9 कायदा 9) (2)
अदालत–श्रीमान सिविल जज (सी0डि0) एफ0टी0सी0 बस्ती जिला बस्ती
प्रकीर्णवाद संo 208/2023
अमरनाथ
बनाम
रामनाथ

1. रामनाथ सिंह पुत्र स्व0 रामचन्दर सिंह निवासी मुहल्ला महरीखांवा जनता होटल की गली मकान नं0–985 तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 19–07–2024

हरगाह मुद्दई ने एक मजकूरुसदर ने इस अदालत में दरख्वास्त हुकूम मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश नाबुदा हस्ब हिदायत अदालत हाजा बतारीख माह सन ई0 पेश की है।

लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप इस अदालत में बतारीख 19 माह 07 सन 2024 या असालतन या बजरिये वकील अदालत हाजा या मुख्तार मजाज हस्ब जाप्ता और वाकिफ हाल मुकदमा में हाजिर होकर वजह (अगर कोई हो) जाहिर करें कि नाबुदी की दरख्वास्त क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान पंचम अति0 सिविल जज (जू0डि0) बस्ती
जिला–बस्ती
मूलवाद सं0 987/92
नन्कान
बनाम
तुलसीराम आदि

2/1 नितराम उम्र लगभग 60 वर्ष 2/2 बलराम उम्र 40 वर्ष पुत्रगण आशाराम 2/3 रामजनम उम्र लगभग 35 साल 2/4 चेतराम उम्र लगभग 30 साल पुत्रगण आशाराम 2/5 चंदा देवी उम्र लगभग 23 साल पुत्री आशाराम 3/1 सतईराम उम्र लगभग 40 साल पुत्र हरीराम 3/2 श्रीमती सुभावती उम्र लगभग 60 साल पत्नी हरीराम 3/3 श्रीमती कान्ती उम्र लगभग 50 साल पत्नी मुनिराम 3/4 रामचरन उम्र लगभग 35 साल 3/5 रामशरन उम्र लगभग 30 साल पुत्रगण मुनिराम साकिनान मल्लपुर तप्पा रामगढ़ परगना अमोढ़ा पो0 घोरसाएं तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 05–07–2024

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुदद्आलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 05 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

रामायण की सीता ने रामलला के दरबार में लगाई हाजिरी

संवाददाता–अयोध्या। रामायण की सीता दीपिका चिखलिया ने बृहस्पतिवार को रामलला के दरबार में हाजिरी लगाई। रामलला के दर्शन कर वे भावुक नजर आईं। वे एक निजी कार्यक्रम में शामिल होने अयोध्या पहुंची हैं। उन्होंने कहा कि यह अयोध्या की मेरी चौथी ट्रिप है। जब भी मैं अयोध्या आती हूं अच्छा लगता है। अयोध्या अब एक शूटिंग हब बनना चाहिए। लोकसभा चुनाव में भाजपा के 400 पार के नारे पर उन्होंने कहा कि 400 पार होगा। शहर के निवासियों में पहुंचकर एक फैशन शोरूम का उन्होंने उद्घाटन भी किया है।

राम मंदिर में अब दो शिफ्टों में हो रही चढ़ावे की गिनती, बढ़ाई गई कर्मचारियों की संख्या

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या रामलला के दरबार में श्रद्धालुओं की संख्या में एक बार फिर से बढ़ोतरी होने लगी है। रोजाना करीब एक लाख श्रद्धालु रामलला के दरबार में हाजिरी लगा रहे हैं। रामनवमी के बाद अचानक श्रद्धालुओं की संख्या घट गई थी, अब छुट्टी के महीने में श्रद्धालु फिर बढ़ने लगे हैं। रामलला के चढ़ावे और दान में भी बढ़ोतरी शुरू हो गई। चढ़ावे की गिनती के लिए कर्मचारियों की संख्या 14 से बढ़ाकर 20 कर दी गई है। साथ ही दो शिफ्टों में चढ़ावे की गणना होती है। रामनवमी के बाद श्रद्धालुओं की संख्या तीन गुना घट गई थी। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद रामलला के दरबार में रोजाना जहां दो लाख भक्त पहुंचते थे। रामनवमी के बाद यह संख्या घटकर 50 से 60 हजार पहुंच गई थी। अब एक फिर दर्शनार्थी बढ़ने लगे हैं। पिछले चार दिनों में रामलला के दरबार में चार लाख से अधिक भक्तों ने दर्शन–पूजन किए। माना जा रहा है यह संख्या अब लगातार बढ़ेगी। राम मंदिर ट्रस्ट के कार्यालय प्रभारी प्रकाश गुप्ता बताते हैं कि रामलला के चढ़ावे की गिनती अब हर रोज होती है। पहले रामलला के चढ़ावे की गिनती जहां सुबह 11 बजे से चार बजे तक चलती थी, अब इसे दो शिफ्टों में कर दिया गया है। अब सुबह 11 से दो और दोपहर में तीन से छह बजे तक दानपात्रें में आई धनराशि की गिनती की जाती है। दान की राशि की गणना की जिम्मेदारी स्टेट बैंक के कर्मी संभालते हैं। विभिन्न माध्यमों से रामलला को हर माह करीब डेढ़ करोड़ का चढ़ावा अर्पित किया जा रहा है। बताया कि चेक, नकदी, आरटीजीएस और ऑनलाइन माध्यमों से भक्त रामलला को निधि समर्पित करते हैं। हर माह चार से पांच लाख की निधि भक्तों की ओर से समर्पित की जाती है।

25 मई को अखिलेश यादव, काजल के पक्ष में करेंगे सभा

संवाददाता–गोरखपुर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव आगामी 25 मई को गोरखपुर लोकसभा में इंडिया गठबंधन से समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी काजल निषाद के समर्थन में जनसभा करेंगे।जनसभा का कार्यक्रम स्थल सहारा स्टेट स्थित क्रिकेट ग्राउंड होगा। इसको लेकर समाजवादी पार्टी को जिला प्रशासन से अनुमति मिल गई है। इससे पहले सपा सुप्रीमो का कार्यक्रम 24 मई को निर्धारित था। पार्टी सुप्रीमो का कार्यक्रम फाइनल होते ही सपा के जिला अध्यक्ष ब्रजेश कुमार गौतम और लोकसभा प्रभारी प्रहलाद यादव कार्यकर्ताओं के साथ जनसभा की तैयारियों में जुट गए हैं। समाजवादी पार्टी इस जनसभा के जरिए मुख्यमंत्री के गढ़ में अपने ताकत का प्रदर्शन करना चाहती है। विधानसभावार और सेक्टरवार कार्यकर्ताओं और पदाधिकारी को जिम्मेदारी सौंप गई है। जिला कार्यकारिणी, महानगर कार्यकारिणी के अलावा सभी अनुषंगिक संगठनों को तैयारी से जोड़ा गया है।

दैनिक भारतीय बस्ती
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया कम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट
अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच, कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेbhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com